भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 9 | अंक 01 | उदयपुर सोमवार 15 जनवरी 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

आज रो दन आणंद अयोध्या मा राम पधार्‌या

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

किस्सा तब का है जब रामचंद्र भगवान, माता जानकी और लक्ष्मण वीर चौदह वर्ष का वनवास पूरा कर अयोध्या लौट रहे थे। देश-देशांतर के लोग अयोध्या पहुंचे और खुशी में फूले नहीं समाये। इन सबमें वे आदिवासी भी थे जिन्होंने वनांचलों में भगवान राम की जितनी बन आई, सेवा-सुश्रुषा की, सान्निध्य लिया और अपने जीवन को धन्य किया। अयोध्या का हर घर, गली, मार्ग, चौराहा, महल, मालिया, छाजा, कंगूरा अनंत-अनंत दीपकों की रोशनी से जगमगा उठा और वहां उपस्थित हर दिल ज्योति की जगमगाहट से अंतर-बाहर ज्योतिर्धर हो गया। मेवाड़ में प्रचलित रासधारी ख्याल में सांगड़िये रामदला की आरती के समय गाते हैं-

जगमग-जगमग जोत जगी रे।
रामजी की आरती होन लगी रे।।
केसर धूप कपूर की बतियां।
आरती करत सखा मिल सखियां।।
रामजी की रटना होन लगी रे।
काली कलूटी रात भगी रे।।

कहते हैं, ऐसी दीपकों की दिव्य-ज्योति सर्वत्र पूरे देश में की गई और तब से ही दीपावली का त्यौहार प्रारंभ हो गया, जो अब तक भी उसी श्रद्धा-भावना तथा आस्था-उमड़ाव का प्रतीक बना हुआ है। रामधारी ख्याल आगे जाकर रासधारी ख्याल के नाम से जाने गये, किंतु उनका कथानक रामजीवन का ही बना रहा।

रामजी की अगवानी में राम के भक्तों ने अयोध्या में अपनी उपस्थिति से रामदर्शन के प्रमाणस्वरूप राम-रज और उनकी अनुपस्थिति में राजपाट संभालने वाली उनकी खड़ाऊ का धोवन-पानी प्राप्त किया। अयोध्या से लौटकर भक्तों ने जहां-जहां राम-रज डाली, वहां कालांतर में गेरु रंग की एक विशाल खान बन गई और जहां खड़ाऊ के धोवन का छींटा गिरा, वहां श्वेत-धवल खड़ी की खान निकली।

मेवाड़ में गेरु रंग की मिट्टी और डलों के रूप में जो खान-संपदा मिलती है, उस राम-रजी माटी को हड़मची कहते हैं। दरअसल उस राम-रज को प्राप्त करने की जो हठ-होड़ मची थी, वही हड़मची के रूप में आंचलिक पहचान बनी हुई है।

यही स्थिति खड़ी अर्थात् खड़िया मिट्टी की है। दीपावली पर हर घर की सफाई के उपरांत हड़मची के घोल की लिंपाई कर आंगन में खड़ी से भांति-भांति के मांडने मांडे जाते हैं। इन मांडनों में चौक और आंगन की सज्जा के प्रतीक बड़े ही आकर्षक तथा मनमोहक सुहावनी भांतों के मांडनों के साथ-साथ रामजी की खड़ाऊ के रूप में पगल्याजी की दर्शना देते मांडनों की मुलकान राम-रंजन की सौगात देती है।

राम-पधारन का अयोध्या में विविध रूपों में मंगलाचार हो रहा है। एक हरजस में सियावर की जैजैकार के साथ उन्हें बधाने का मंगलाचार गाया जाता है जिसमें कहा गया है- आज का दिन बड़े ही आनंद का है। अयोध्या में राम-लक्ष्मण-जानकी का पधारना हो रहा है। उनके मंगल गायन पर सोने-चांदी की ईंटों से नवखंड वाला महल बनवाओ। सोने-चांदी के कलश से उनकी आरती उतारो। रघुवर को कत्था-चूना लगा हुआ पान चबाने को दो। सोने की थाली में उन्हें भोजन कराओ। सोने की झारी में गंगाजल पिलाओ। सोने की थाल में रत्नजड़ित पासे से उन्हें खेलाओ। हिंगलू के ढोलिये पर फूलों की सेज सजाकर उन्हें पोढ़ाओ। आज का दिन बड़े आनंद का है। अयोध्या में राम का पदार्पण हो रहा है-

आज रो दन आणंद अयोध्या मा राम पधार्‌या।
राम पधार्‌या ने लछमण आया,
अयोध्या में हुवा मंगलाचार।।
अयोध्या में हुवा जै-जैकार।। अयोध्या. ।।
सोना रूपा री ईंट पड़ावो,
नौ खंड्यो म्हेल चुणावो।। अयोध्या. ।।

सोना रूपा रो कलस मंगावो,
सियावर ने जाय वंदावो।। अयोध्या. ।।

सोना रूपा री आरती संजोवो,
सियावर ने जाय उतारो।। अयोध्या. ।।
पाको सो पान कलाई को चूनो,

रघुवर ने जाई चबावो।। अयोध्या. ।।
सोना री थालों में भोजन परुसो,
रघुवर ने जाई जिमावो।। अयोध्या. ।।
सोने री झारी में गंगाजल पाणी,
सियावर ने जाय पिलावो।। अयोध्या. ।।
सोने री थाल जड़ाऊ रा पासा,
सियावर ने जाय खेलावो।। अयोध्या. ।।
हिंगलू रो ढोल्यो ने फूलां छाई सेजां,
सियावर ने जाय पोढ़ावो।। अयोध्या. ।।
अयोध्या में राम पधार्‌या,
आज रो दन आणंद अयोध्या में राम पधार्‌या।
राम पधार्‌या ने लछमण पधार्‌या,
अयोध्या में हुवा मंगलाचार।। अयोध्या. ।।

भारतीय पट्ट चित्रों की परंपरा में कपड़े पर विशेष विधि से जो चित्र मांडे जाकर विशिष्ट वाचकों द्वारा ग्राम्य-जीवन में जो मनौतीमूलक रंजन किया जाता है, वह चित्रफलक, पड़ अथवा फड़ नाम से लोकप्रिय है। इनमें देवनारायण तथा पाबूजी की पड़ों ने पूरे विश्व में ख्याति अर्जित की है। इन पड़ों के अलावा उनके अत्यंत लघु रूप में जो पड़क्या प्रसिद्धि लिए है, उसे रामदला नाम से जाना जाता है। इसके प्रचलित अन्य नामों में 'भगवान का चंदोवा' तथा 'रामदला का पाटिया' है।

रामदला पड़ के साथ अन्य पड़ की तरह लंबी गाथा तथा उसकी गावणी अथवा गायकी नहीं होती। केवल चित्रफलक होते हैं, जिन्हें दर्शाकर एक-एक पंक्ति में वाचना की जाती है। रामदला के इस चित्रपट को भोपे दिखाकर धानचून इकट्ठा करते हैं। कालांतर में रामदला में रामचरिताख्यान के अलावा अन्यान्य तीर्थों, देवताओं, भक्तों तथा उन विशिष्ट यजमानों के चित्र-नाम भी जुड़ते गये, जिन्होंने रामदला वाचन को विशिष्ट भेंट-भेंटावण से सम्मानित किया।

ऐसा ही कुछ राम-कावड़ के वाचकों ने भी किया। प्रारंभ में काष्ठ निर्मित एक पाट अर्थात् पाटिया की ही कावड़ थी, जिस पर राम-जानकी के चित्र मंडे होते थे। धीरे-धीरे रामजीवन की विविध झांकियां दर्शाई गईं और ज्यों-ज्यों चित्रकथा के रूप बढ़ते गये, त्यों-त्यों कावड़ में पाट जुड़ते गये और एक पाट की कावड़ के आठ-आठ, दस-दस पाट तक का रूप ग्रहण कर लिया लेकिन कावड़ का भी वही हश्र हुआ जो रामदला का हुआ। विभिन्न तीर्थों, देवी-देवताओं के अलावा यजमान अधिक जुड़ते गये, जो हर तीसरे वर्ष की फेरी में कावड़ियों को खासा इनाम-बख्शीश करते थे।

कावड़ का प्रारंभिक रूप रामजीवन की चित्रात्मक गाथा का वाचन-श्रवण ही था। इसीलिए उसे 'रामजी की कावड़' कहा गया। वाचक कावड़िया भाट कावड़ को बडे यत्न से लाल कपड़े में बांधे रखता है और सुनाते समय पवित्र तन-मन से जमीन पर आसन लगाकर एक हाथ में, गोदी में थामे रहता है।

दूसरे हाथ से पट चित्रित चित्रों को मयूरपंख का स्पर्श दिये विशिष्ट लहजे में प्रत्येक चित्र का अरथावण करता है। प्रारंभ में उसी लहजे में अपने गाम-नाम का परिचय देता कावड़ वाचन प्रारंभ करता है। पूरी कावड़ में लगभग सौ के करीब चित्र होते हैं। इन चित्रों से कई तरह की जानकारी मिलती है।

रामायण के अलावा महाभारत के चरित्रों तथा लोकजीवन में चर्चित विशिष्ट व्यक्ति, संत, महंत, विशिष्ट भक्त तथा प्रमुख दानदाता का स्मरण कावड़ में पाकर तत्कालीन समाज-परिवेश का कई दृष्टियों से अध्ययन किया जा सकता है। पौराणिक आख्यानों के चरित्रों पर भी जो कुछ दरसाव मिलता है, उसके साथ लोकजीवन में जुड़े जो मिथक हैं, वे भी बड़ी रोचक जानकारी संकेतित करते हैं। वाचन के समय कावड़िया बार-बार राम नाम उच्चरित कर सबको राम-शरणमय होने की सुगत देता है।

फसल पकाई पर जब मक्की के पौधे में मांजर-मूंछ का गुच्छा भुट्टे के सिर पर चोटी की तरह पत्तों के आवरण से बाहर निकलने को होता है, तब धीरे-धीरे श्वेत मूंछें कच्चेपन की कंचुकी छोड़ पक्केपन के प्रतीक रूप में भूरापन लेती हुई काली यानी गहरी भूरी दिखने लग जाती है। यह स्थिति भुट्टे में दाने आकर उसके पकने की स्थिति का दरसाव होता है। ऐसी स्थिति में कुछ भुट्टे उसके डंठल से अलग कर रामजी के नाम रख दिये जाकर या तो किसी देवरे में चढ़ा दिये जाते हैं या फिर किसी साधु-तपसी को दे दिये जाते हैं। यही स्थिति ज्वार के कण भरे हुए गुच्छे की होती है जिसे पेंकड़ा कहा जाता है।

- शेष पृष्ठ सात पर

पहली झील कौनसी ?

-डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू -

किसी झील को देखकर कितना सुखद लगता है। उठती लहरें, तटों से टकराती लहरें, फेनिल जलराशि और पक्षियों का क्रीड़ा-कलरव... न जानें क्या क्या सोच लेता है मन। मन जो नजर नहीं आता मगर जो नजर आती है, वह झील है।

झीलों के निर्माण का इतिहास भारत में सुदर्शन झील से शुरू होता है। बहुत सुंदर झील थी यह। महाभारत के खिल कहे गए हरिवंश पुराण में जिस रैवतक पर्वत का जिक्र आता है, उसके पास ही इस झील का निर्माण करवाया गया था। वहीं पर कभी रेवती का पीहर था। द्वारका के विवरण में इस पर्वत के सौंदर्य और वहां के वनों का मनोहारी वर्णन मिलता है। तब तक यह क्षेत्र बहुत सुंदर दिखाई देता था, कारण था जल और जलस्रोतजन्य सौंदर्य की सहज उपलब्धता। इस पर्वत की एक पहचान उर्जयत के नाम से थी।

वहीं पर जूनागढ या गिरिनगर था। ईसापूर्व चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पुष्यगुप्त ने इस पर्वत से निकलने वाली 'सुवर्णसिकता' और 'पलाशनी' नदियों के जल के संग्रहण के लिए इस झील का निर्माण करवाया और उसे इस सौंदर्य के कारण ही सुदर्शन झील का नाम दिया।

यहीं से भारत में नदियों पर झीलों के निर्माण का प्रणाम मिलना आरंभ होता है। यह निर्माण 312 ई.पू. के आसपास हुआ था। निर्माण के करीब पचास साल बाद ही इस झील से सिंचाई के महत्त्व को समझा गया। चंद्रगुप्त के बाद अशोक मौर्य ने इसका सर्वेक्षण करवाया और यवन प्रांतपाल तुषास्फ को इसके विस्तार का जिम्मा सौंपा। उसने न केवल बांध का विस्तार किया बल्कि बांध से नहर और नहर से वितरिकाओं की प्रणाली का भी विकास किया। यही नहीं, यदि समुद्रगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख को प्रमाण माना जाए तो तब तक इसमें एक नदी की जलराशि को और लाया गया था, उसका नाम था विलासिनी। यह भी उर्जयत पर्वत से ही निकलती थी और समुद्रकांता अर्थात नदियों की तरह ही समुद्र की पत्नी या समुद्रगामी थी। इस झील का दो-दो बार जीर्णोद्धार हुआ, महाक्षत्रप रुद्रदामन और समुद्रगुप्त के समय पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित के हाथों।

चक्रपालित ने इसकी जो प्रशस्ति लिखवाई, वह संस्कृत अभिलेखों के इतिहास में पहला ग्रंथ है जिसको शिलोत्कीर्ण किया गया था। इसका नाम था- सुदर्शन तटाक संस्कार ग्रंथ रचना। विरासत के संरक्षण की यह अपूर्व चेतना थी। (देखिये मेरी संपादित - उद्धार धोरणी)

तब यह कामना की गई थी कि जब तक आकाश में चन्द्रमा और सूर्य रहे, तब तक यह झील रहे, मगर क्या आज यह सुरक्षित हैं? कौन जानता है इसके अवशेषों के बारे में... यह सुदर्शन आज सुदूरदर्शन होकर रह गई, केवल अभिलेखों में ही इसकी पहचान हो गई है? (भारतीय जल स्रोत)

पिम्स हॉस्पिटल द्वारा 185 सैन्य अस्पताल में रक्तदान शिविर आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। सेना दिवस पर देश के वीर सैनिकों ने स्वैच्छिक रक्तदान कर सेना दिवस को यादगार बना दिया। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा द्वारा मिलिट्री हॉस्पिटल उदयपुर में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में मिलिट्री हॉस्पिटल के कर्नल डॉ. यादवेंद्रसिंह यादव ने पिम्स हॉस्पिटल के वाइस चांसलर डॉ. जे. के. छापरवाल, मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. चंद्रा माथुर का से स्वागत किया। डॉ. छापरवाल ने सभी जवानों को रक्तदान की महत्ता से अवगत कराया। शिविर में 52 जवानों ने रक्तदान किया और 10 जवानों ने रिजेट्रेशन करा भविष्य में रक्तदान करने का संकल्प लिया। शिविर में डॉ. अपेक्षा, ब्लड बैंक इंचार्ज अमिता पुजारी, टेक्निकल स्टॉफ लालाराम गायरी, सुरेश गोराना, मुकेश सिंह, उत्कर्ष मेघवाल, पेमाराम टीम का कार्य सराहनीय रहा।

पिम्स हॉस्पिटल के चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने कहा कि 15 जनवरी सेना दिवस के उपलक्ष में रक्तदान शिविर से जो भी ब्लड यूनिट एकत्रित हुआ है, उससे किसी ना किसी जरूरतमंद की जान जरूर बचेगी। उन्होंने कहा कि सेना देश की सीमाओं की सुरक्षा तो बखूबी करती ही है समय-समय पर आमलोगों के लिए रक्तदान कर उनकी जान भी बचाती है।

ईश्वर और धर्म : परहेज, मान्यता और उपयोगिता

- राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी -

जिन मुट्ठीभर बुद्धिजीवियों को ईश्वर और धर्म से परहेज है, वे परहेज करके संतुष्ट रहें। वे किताबों में क्रान्ति को ढूंढ़ते रहें, किताबों की क्रान्ति करते रहें। उनको व्यर्थ छेड़ने की जरूरत नहीं है। जिस प्रकार पोप ईसा नहीं होता, मुल्ला मुहम्मद साहब नहीं होता, मुनि, महावीर वर्धमान नहीं होता, महास्थविर बुद्ध नहीं होता, पीठस्थ महन्त आदिशंकराचार्य नहीं होता, कबीर-पन्थी कबीर नहीं होता, ग्रन्थी गुरुनानक नहीं होता, गान्धीवादी महात्मा नहीं होता, कामरेड कार्लमार्क्स नहीं होता, आर्य समाजी दयानन्द नहीं होता, उसी प्रकार धर्मसंस्था धर्म नहीं है। धर्म लोक की शक्ति है और धर्मसंस्था वर्ग की चीज है। कृपया धर्मसंस्था को धर्म न समझें।

यह बात सुनते-सुनते मुझे पचास साल से भी अधिक हो गये हैं कि अब ईश्वर और धर्म की उपयोगिता समाप्त हो गयी है। तोता-रटन्त का क्या है? यह रटते हुए इनको और इनकी पीढ़ियों को आगे पांच सौ साल भी हो जायेंगे लेकिन लोकजीवन के अपने सर्वेक्षणों में मैं निरन्तर देख रहा हूं कि सामान्यजन बात-बात में भगवान का नाम लेता है। दिन में सौ बार धर्म और ईमान की बात करता है।

विधानसभा-सदस्य, मंत्रीगण आदि ईश्वर के नाम पर शपथ ग्रहण करते हैं। कार्लमार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिक-सिद्धान्त को मैं मानता हूँ लेकिन यह भी मानता हूं कि कार्लमार्क्स अपने जमाने का सच था। कोई माने या न माने यह सच है कि कार्लमार्क्स का सपना अब बिखर चुका है।

शोषण का अन्त नहीं हुआ, वर्ग विषमता बढ़ गयी और राज्यसंस्था पहले से भी अधिक प्रबल हो गयी। शोषण का और भी अधिक विभीषण रूप विश्वबाजार के रूप में हमारे सामने आ गया है, जो हमारे प्राकृतिक-संसाधनों पर कब्जे ले रहा है।

इसका कारण मनुष्य की प्रकृति है। उसकी मूलप्रवृत्तियाँ हैं। मूलप्रवृत्तियों का सिद्धान्त मनोविज्ञान, मानवविज्ञान और लोकविज्ञान का सिद्धान्त है, वह उतना ही विज्ञान है, जितना कार्लमार्क्स। यह विज्ञान बतलाता है कि आप मनुष्य की प्रकृति को नहीं बदल सकते। हां, समष्टि-हित को जगा कर उनका नियमन कर सकते हैं लेकिन जब समाज को विभक्त किया जायेगा तो शोषण बढ़ेगा, कम नहीं होगा। समष्टि-हित के लिए ईश्वर और धर्म की उपयोगिता आज भी है और कल भी रहेगी।

सोवियत संघ का विघटन हो चुका और आज उसी के अंग रहे देश आपस में युद्ध कर रहे हैं। यह मनुष्य की प्रकृति है। जिन मुट्ठीभर बुद्धिजीवियों को ईश्वर और धर्म से परहेज है, वे परहेज करके संतुष्ट रहें। वे किताबों में क्रान्ति को ढूंढ़ते रहें, किताबों की क्रान्ति करते रहें। उनको व्यर्थ छेड़ने की जरूरत नहीं है लेकिन लोकजीवन में ईश्वर और धर्म की मान्यता है। वह अपनी जगह रहेगी।

धर्म के मंच से भारत के लोगों ने बड़े त्यागी-तपस्वियों के नाम सुने हैं। मेधातिथि, काण्व, याज्ञवल्क्य, वामदेव, गृत्समद, अथर्वण, दीर्घतमा, पिप्पलाद, भृगु, अंगिरा, कपिल, अवधूत दत्तात्रेय, गौतम, कणाद, पतंजलि, बादरायण, महावीर वर्द्धमान, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट, मंडनमिश्र, गोरखनाथ, चर्पटनाथ, भर्तृहरि, सरहपा, मत्स्येन्द्रनाथ, रामानुज, मध्व, चैतन्य, वल्लभ, विष्णुस्वामी, रामानन्द, ज्ञानेश्वर, अभिनवगुप्त, नागार्जुन, शबरस्वामी, उदयन, यास्क, पाणिनि, कात्यायन, सायण, कबीर, नानक, गुरु गोविन्दसिंह, चैतन्य, तुलसीदास, स्वामी हरिदास, मधुसूदन सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, महर्षिअरविन्द विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी जैसे शत-सहस्र नाम हैं, जिन्होंने अपने जीवन को देश के लिए, समाज के लिए समर्पित करके धर्म की प्रतिष्ठा की।

मानवता का प्रतिपादन किया। इन्होंने केवल किताबें नहीं लिखीं, इन्होंने जो कहा वह किया। अपने जीवन को अपने सिद्धान्तों की प्रयोगशाला बना लिया। लोकजीवन के साथ इनका तादात्म्य-संबंध था। मनुष्यता का मार्ग इनके चिन्तन की परम्परा में है। इन्होंने अपने स्व से ऊपर उठ कर चिन्तन किया था। इनके नाम भी लोगों के लिए पावन बन चुके हैं क्योंकि इनके चिन्तन में संकीर्णता नहीं है।

मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है कि उच्चतम रूप में वह धर्म को एक 'भगवान' 'एक अवतार' 'एक विश्वास' 'निष्काम-भक्ति' में व्यक्त करता है। सभी धर्म-सम्प्रदायों ने मानव के सामूहिक मन में स्थायी निवास बनाया हुआ है। विज्ञान या तर्कवाद इस आस्थापरक मन को तहस-नहस तो कर सकता है, उसे नष्ट नहीं कर सकता।

धर्मशास्त्रों में 'धर्म' शब्द अनेकार्थी है और नैतिक आचरण से नाभि- नाल सम्बन्ध रखता है। कितनी सच किन्तु विचित्र बात है कि भारतीय संस्कृति ने कभी भी वेद-उपनिषद गीतों को भुला नहीं पाया है। पूरा भारतीय लोकमानस इन ग्रंथों से दुर्निवार रूप में जुड़ा है। इन ग्रंथों ने भारतीय सांस्कृतिक नवजागरण, स्वाधीनता संग्राम तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य को भीतर से प्रेरित प्रभावित किया है।

धर्म का सवाल मूल रूप से व्यष्टि और समष्टि के सम्बन्ध का प्रश्न है। व्यष्टि और समष्टि के बीच द्वन्द्व चलता ही रहता है और इस द्वन्द्व में धर्म का मूल तत्त्व भी बार-बार आच्छादित हो जाता है। धर्म का मूल तत्त्व समन्वय है, सामंजस्य है, सहिष्णुता है। दूसरे शब्दों में कहें तो सामाजिक मन में स्थायीभाव (सत्य-अहिंसा-दया आदि) का आधान करने वाली प्रक्रिया धर्म है।

समाज ही धर्म का विधान करते हुए विनय, समर्पण, उदारता, दान, अपरिग्रह, सत्य, प्रेम, अहिंसा, आर्जव, समता, संतोष आदि को चित्त में प्रतिष्ठित करता है। लेकिन धर्म और धर्म-संस्था के अन्तर को जानना आवश्यक है। धर्मसंस्था धर्मध्वज है, धर्म का उपलक्षण। उसी प्रकार धर्मसंस्था धर्म नहीं है।

दोनों में आकाश-पाताल का अंतर है। विश्व के किसी धर्म-पन्थ को देख लीजिये। जिस प्रकार पोप ईसा नहीं होता, जिस-प्रकार मुल्ला मुहम्मद साहब नहीं होता, जिस-प्रकार मुनि, महावीर वर्धमान नहीं होता, जिस प्रकार महास्थविर बुद्ध नहीं होता, जिस-प्रकार पीठस्थ महन्त आदिशंकराचार्य नहीं होता, जिस-प्रकार कबीर-पन्थी कबीर नहीं होता, जिस-प्रकार ग्रन्थी गुरुनानक नहीं होता, जिस प्रकार गान्धीवादी महात्मा नहीं होता, जिस प्रकार कामरेड कार्लमार्क्स नहीं होता, जिस प्रकार आर्य समाजी दयानन्द नहीं होता, उसी प्रकार धर्मसंस्था धर्म नहीं है।

क्या वैभव के बीच रहने वाला पोप ईसा मसीह का प्रतिनिधि है? क्या मुल्ला मुहम्मद साहब के विवेक का प्रवक्ता है? क्या ग्रन्थी गुरु नानक या अन्य गुरुओं जैसा है? क्या सामान्य मुनि महावीर वर्धमान है? क्या महास्थविर महात्मा बुद्ध है? क्या शंकरपीठ का महन्त आदिशंकर की प्रतिमूर्ति है? ईसा मसीह और पोप का अन्तर, बुद्ध और महास्थविर का अन्तर, महावीर और मुनि का अन्तर, मुहम्मद साहब और मुल्ला का अन्तर, गुरु नानक और ग्रन्थी का अन्तर, कबीर और कबीरमठ के महन्त का अन्तर, आदिशंकराचार्य और पीठस्थ महन्त का अन्तर एक धर्म है और दूसरा धर्मसंस्था।

इस रहस्य को मनुष्य की प्रकृति में खोजना होगा। धर्म लोक की शक्ति है और धर्मसंस्था वर्ग की चीज है। कृपया धर्मसंस्था को धर्म न समझें। सच्ची बात तो यही है कि धर्मसंस्था धर्म का साधन है, साध्य नहीं किन्तु यह मनुष्य जीवन की विडंबना है कि धर्मसंस्था ही धर्म को आच्छन्न कर लेती है और धर्मसंस्था को ही लोग धर्म समझ लेते हैं। यह वास्तव में एक ऐसा रहस्य है, जिसे व्यक्ति स्वार्थ और समष्टिहित के द्वंद्व की निरंतर प्रक्रिया को जाने बिना नहीं समझा जा सकता।

मन्दिर आदि उसी सीमा तक धर्म हैं, जिस सीमा तक वे समष्टिहित के साधन हैं। यदि वे व्यक्ति स्वार्थ के साधन बन चुके हैं तो वह अधर्म के साधन हैं। जिस प्रकार धर्म और धर्मसंस्था भिन्न हैं, उसी प्रकार धर्म और धर्मान्धता भी भिन्न-भिन्न हैं।

धर्म संजीवनी है तो धर्मान्धता मनोव्याधि है। जो लोग धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्महीन- राज्य बतलाते हैं, उनकी नीयत पर संदेह होना स्वाभाविक है। वे या तो भारत के मन को नहीं जानते या फिर परायी अवधारणाओं को थोपने के लिये वितंड़ा करते हैं। आपकी किताब में जो लिखा है, उसे लिखा रहने दीजिये, भारत का सामान्य जन धर्म से निरपेक्ष होने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

सर्वधर्म-समभाव, मैत्री, सहिष्णुता जैसे मूल्य नित-नित नमस्करणीय है। आपकी वैज्ञानिक दृष्टि तो यह होती कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, राजनैतिक दृष्टिकोण को लेकर अनुसंधान करते कि वे कौन से कारण हैं कि लोकजीवन में ईश्वर और धर्म प्रतिष्ठित हैं? वैज्ञानिकता यह होती कि धर्म और पाखण्ड का अंतर किया जाता और धर्म के नाम पर राजनैतिक आर्थिक शोषण के विरुद्ध लोगों को जगाया जाता।

बुद्ध से लेकर कबीर जैसे सन्त, स्वामी रामकृष्ण परमहंस ,विवेकानन्द और दयानन्द, महात्मा गांधी जैसे तपस्वी उन मान्यताओं का परिष्कार करते रहेंगे। परिवर्तन होता रहेगा। समष्टि के विधान के रूप में धर्म की उपयोगिता आज भी है और कल भी रहेगी।

मोटोरोला की भारत में नई पेशकश

उदयपुर (ह. सं.)। मोटोरोला, भारत के सर्वश्रेष्ठ 5जी स्मार्टफोन ब्रांड

और पैनटोन, वैश्विक रंग प्राधिकरण ने दूसरे साल के लिए मिलकर पैनटोन कलर ऑफ द ईयर में डिवाइस बनाने के लिए एक टीम बनाई है। मोटोरोला पेन्टोन के साथ बहु-वर्षीय विशेष सहयोग करने वाला पहला और एकमात्र स्मार्टफोन ब्रांड है, जो सार्थक नवाचार के माध्यम से लोगों के जीवन को समृद्ध करते हुए डिजाइन और रंगों में अंतर लाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

इस वर्ष, चुने गए रंग पेन्टोन 13-1023 पीच फ़ज़, के साथ पैनटोन कलर ऑफ द ईयर कार्यक्रम की 25वीं वर्षगांठ है। एक मखमली कोमल पीच रंग, पीच फज़ की एक आदर्श आभा है, जो एकजुटता, समुदाय और सहयोग की भावनाओं को अभिव्यक्त करती हैं। नए वर्ष का रंग, पैनटोन 13-1023 पीच फ़ज़, मोटोरोला के समावेश और प्रौद्योगिकी को सभी के लिए अधिक पहुच योग्य बनाने के साथ खूबसूरती से मेल खाता है।

ग्राहक अब इंडस्ट्री के सबसे उन्नत फ्लिप-फोन, razry40 ultra को केवल 69,999 रुपये की अविश्वसनीय प्रस्ताव मूल्य में प्राप्त कर सकते हैं, जिसमें सीमित समय के लिए 10,000 रुपये की सीधी छूट शामिल है। उपभोक्ताओं के लिए प्रमुख बैंकों से 3, 6 और 9 महीनों के लिए केवल 7,778 रुपये प्रति माह से शुरू होने वाली नो कॉस्ट ईएमआई की भी पेशकश की है।

मोटोरोला edge 40 neo एक ऐसा डिवाइस है जो डिज़ाइन के केंद्र में रंग को रखता है और वीगन लेदर में पैनटोन पीच फ़ज़ रंग, डिवाइस को सुंदर और कंटौर्ड डिज़ाइन को सुंदरता से पूर्ण करता है। इस स्मार्टफोन को दुनिया का सबसे हल्का 5जी फोन भी बनाया गया है।

स्मृतियों के शिखर (178) : डॉ. महेन्द्र भानावत

डॉ. जावलिया : हस्तलिखित ग्रन्थों के बारहमास बसंत

नये वर्ष 2024 के प्रथम सूर्योदय की सुहानी किरणें आधीअधूरी खिलखिलाने को थीं कि मैंने डॉ. देव कोठारी को फोन किया कि आज जब भी चाहें तब डॉ. ब्रजमोहन जावलिया से मिलने का समय निकालें तो उनकी कुशलक्षेम पूछ आयें। उत्तर में कोठारीजी बोले- कुछ समय से वे अधिक अस्वस्थ से हैं। उनकी पहचान-शक्ति भी जाती रही। मैंने कहा, फिर भी अपने को चलना ही चाहिये। जैसी भी परिस्थिति हो, राम-राम कर उनके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की मंगल कामना कर अपने को आत्मतोष होगा।

भटियाणी चौहट्टा स्थित मामाजी की हवेली के सामने की गली में स्थित हमीरगढ़ की हवेली में मैं यदाकदा जावलियाजी से मिलने जाता रहता था। मेरा उनसे सन् 1960 से परिचय था। पूर्व में वे सिंधी बाजार की एक गली तेलीवाड़ा में रहते थे। उनके पास ही तेजसिंह 'तरूण' रहते। कई बार तो हम दोनों साथ-साथ उनसे मिलकर गपशप करते। जावलियाजी उतने तो उन्मुख नहीं थे पर हंसी-मसखरी में पीछे नहीं रहते।

उसके बाद जावलियाजी रावजी का हाटा स्थित सरदारगढ़ की हवेली में रहने लगे। ऊंची टेकरी पर स्थित यह हवेली बहुत बड़ी है। इसमें जावलियाजी के साथ सरस्वती भवन लाइब्रेरी के संचालक श्यामसुन्दर व्यास तथा राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग के अध्यक्ष दुर्गालाल माथुर भी रहते थे। तब संग्रहालय राजमहल परिसर में था।

उसी के पास राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान का दफ्तर था जिसमें जावलियाजी इन्चार्ज थे। इन्हीं दफ्तरों के पास राजस्थान साहित्य अकादमी का दफ्तर था जिसके डाइरेक्टर डॉ. मोतीलाल मेनारिया थे। इनके पास जाने का एक रास्ता नावघाट की ओर से भी था। मैं जब भी उधर जाता, तीनों से ही मिलता।

सरदारगढ़ की हवेली में अक्सर छुट्टियों के दिनों में हमारी महफिल जुड़ती जिसमें जावलियाजी और उनके मित्र माथुर सा. और व्यासजी के साथ हमारी अनेक विषयों पर सारगर्भित बातचीत होती जिससे हम साहित्य पुरातत्व लोककला संस्कृति से सम्बन्धित अपने-अपने अनुभवों के आदान-प्रदान से समृद्ध होते।

याद पड़ता है, सित्तर के दशक में जब मैं जड़ियों की ओल स्थित भण्डारियों की घाटी पर रहता था तब जावलियाजी मेरे निवास पर आते रहे। एक दिन बोले कि लक्ष्मी 'कमल' को नरोत्तमदास स्वामीजी अपने निर्देशन में लोककथाओं पर पीएच. डी. करवा रहे हैं और उन्होंने मुझे लिखा कि आपने बहुत सारी लोककथाओं का मूल्यवान संग्रह कर रखा है सो सहयोग करें तब मैंने अपना पूरा संग्रह ही उन्हें दे दिया था।

बाद में जावलियाजी ने मुझे लक्ष्मी 'कमल' से भी मिलवाया। लक्ष्मी 'कमल' लगभग महीने भर जावलियाजी के वहीं रहीं और अपना शोधप्रबन्ध पूरा किया। उसके बाद एक दिन जावलियाजी ने मुझे सूचना दी कि लक्ष्मी 'कमल' को पीएच. डी. मिल गई है और अपने बटुए से निकाल उसका फोटू भी दिखाया। तब से मैं जब भी उनसे मिला, लक्ष्मी 'कमल' के लिए अवश्य पूछता। अन्तिम बार जब उनसे ठीक से भेंट हुई तब भी मैंने लक्ष्मी 'कमल' के बारे में जानना चाहा तो वे मुस्कान भरते यही कहते रहे- 'अब तो पता नहीं, वे कहां होंगी।'

स्वामीजी और मेरे बड़े भाई डॉ. नरेन्द्र भानावत ने मिलकर कुछ पुस्तकों का सम्पादन किया। वे जयपुर भाई सा. के वहीं ठहरते। भाई सा. ने एक पुस्तक स्वामीजी और अपने नाम से सम्पादित की। जब वह छपने जा रही थी तो स्वामीजी ने उसमें लक्ष्मी 'कमल' का नाम भी जुड़वाया।

एकबार तो स्वामीजी भाई सा. के घर महीने भर रहे तब मुझे मां ने बताया कि स्वामीजी एक भी दिन हमसे या बच्चों से नहीं मिले। मैं उनके स्वभाव से परिचित था। एम. ए. की पढ़ाई के दौरान भी वे दो पंक्ति के दोहे का अर्थ मात्र डेढ़ पंक्ति में बताते। कक्षा में मैंने उन्हें कभी मुस्कराते या हमसे बातचीत करते नहीं पाया। अपनी 'जिन्हें मैं जानता हूं' पुस्तक में मैंने स्वामीजी पर भी लिखा जो तब बड़ा चर्चित रहा।

जावलियाजी के सुपुत्र देवेन्द्र जावलिया, जो नगर निगम के पार्षद भी रहे, ने बताया कि सरदारगढ़ की हवेली के पूर्व वे देलवाड़ा की हवेली में भी रहे। पास ही भटियाणी चोहट्टा के उतार में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के सामने डॉ. गोपीनाथ शर्मा रहते थे जो जानेमाने इतिहासज्ञ थे और राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में इतिहास विभाग के अध्यक्ष-प्रोफेसर थे। वे बड़े गम्भीर अध्येता थे। सेवानिवृत्ति के बाद जब वे उदयपुर आए तो मेरा उनसे मिलना होता रहता। मैं जो कुछ लिखता उन्हें बताता और यह भी कहता कि मेरा क्षेत्र शुद्ध लोकजीवन में असरी-पसरी घटनाओं को खंगालते महत्त्वपूर्ण घटना-प्रसंगों का लेखन है।

डॉ. शर्मा चुपचाप सुनते रहते। मैंने उन्हें यह भी कहा कि इतिहास मात्र पट्टे, परवानों, शिलालेखों में अंकित अक्षर-समूहों का लेखा नहीं है। लोकजीवन में जो विविध संस्कृतिजीवी लोकधर्मिता से जुड़ी बातें हैं उनका लेखांकन भी इतिहास का ही मूल्यवान हिस्सा है। यह सुन डॉ. शर्मा बाले, सो तो स्तुत्य है पर आपके लेखन ने तो हमारे लेखन को ही व्यर्थ कर दिया है।

वहीं पास में देलवाड़ा की हवेली बड़े विशाल परिसर में स्थित थी। उसी के एक हिस्से में जैन छात्रावास चलता था जिसके संचालक पं. पूर्णचन्द दक थे। वे कानोड़ मेरे ही गांव के थे सो मैं वहां अक्सर जाता रहता। उसी के पीछे प्रो. दिनेश भारद्वाज का निवास था जो मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में भूगोल के विभागाध्यक्ष थे और 'भू दर्शन' नामक त्रैमासिक भूगोल पत्रिका निकालते थे।

उनके पीछे वाली सड़क ही रावजी का हाटा बस्ती लिये है। भारद्वाजजी अच्छे रेखा चित्रकार थे। उन्होंने मेरा फोटू लेकर जो डोट चित्र (बिन्दु चित्र) बना मुझे दिया वह अनेक जगह मेरे आलेखों के साथ प्रकाशित हुआ और आज भी बड़े करीने से मेरे संग्रह में सम्भाले हुए है।

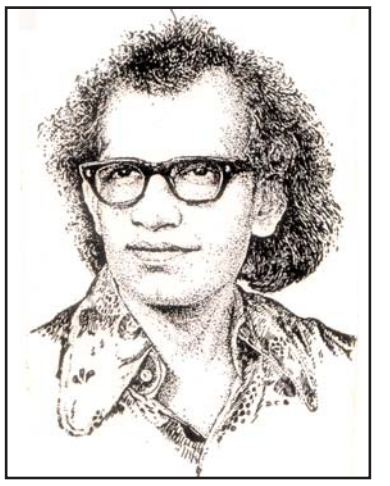

हमीरगढ़ की हवेली राजमहल के परकोटे से जुड़ी हुई है। यहां कभी डॉ. देव कोठारी के साथ तो कभी डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' के साथ भी मैं जावलियाजी से मिलने जाता रहा। इन्हीं के पास वाली गली में डॉ. राधेश्याम वशिष्ठ रहते थे जो राजस्थान विश्वविद्यालय में चित्रकला के प्रोफेसर थे। मेरी आत्मजा डॉ. कहानी ने इन्हीं के निर्देशन में सांझीकला पर पीएच. डी. की उपाधि ली। ये भी मेरे अच्छे दोस्त थे।

राजस्थान की चित्रकला और उसकी प्राचीनता को लेकर उन्होंने बड़ा शोधानुसंधान किया। जब वे पीएच. डी. कर रहे थे तब मैंने भी उन्हें लोक चित्रकारी बाबत सहयोग किया था। बाद में उन्होंने डी.लिट्. की उपाधि ली। उनकी चित्रकला सम्बन्धित कई पुस्तकें बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई। उनके पुत्र डॉ. धर्मवीर उनके अधूरे कार्य को पूरा करने में लगे हैं।

सरदारगढ़, देलवाड़ा और हमीरगढ़ मेवाड़ राज्य के माने हुए ठिकाने रहे। इनमें इनसे सम्बन्धित ठिकानेदार निवास करते थे सो मैं जब भी जावलियाजी से मिलता उन्हें 'हवेली राजा' कहकर ही सम्बोधित करता। इससे वे बड़े खुश होते और कहते भी कि 'क्यों रोळां करते हो।' मैं यही कहता कि आप तीन-तीन ठिकानेदारों की हवेलियों की समृद्ध गंध को आत्मस्थ किये हुए हैं जबकि मैंने तो ऐसी एक भी हवेली की हवाखोरी नहीं ली है।

नवें के दशक में जब जावलियाजी ने अणु उम्र (91 से 99 तक की उम्र) में प्रवेश किया तो बोले कि अब थोड़ा सा ऊंचा सुनने लग गया हूं। मैंने कहा, डॉ. देवराज उपाध्याय जो यहां सुखाड़िया विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष थे, वे बिल्कुल नहीं सुनते थे पर अपने साथ कुछ छुटपुट कागजों के साथ क्लीप बोर्ड रखते थे। आप भी क्लीप बोर्ड रखा करें ताकि मिलने वालों से उसके जरिये बातचीत हो सके। वे वैसा ही करने लगे किन्तु आगे जाकर वे नितान्त अनसुने हो गये और जब डॉ. देव कोठारी और मैं शायद सन् 2022 के मई माह में मिलने गये तो जावलियाजी हमें स्मृतिविहीन ही लगे। इस पर बड़ी देर तक उनकी सहधर्मिणी के साथ हम अपना दु:खड़ा बांटते रहे। वे बड़ी भली महिला थीं। जावलियाजी के सभी मित्रों के साथ उनका व्यवहार बड़ा स्नेहशील सम्मानजनक था। खुलकर बातचीत करने और जावलियाजी के हर लेखन तथा पुस्तक को बड़े करीने से सम्भाले रखकर उन्हें निश्चिंत किये रहती थीं।

इसे विधि का व्यंग्य और देव का दुर्योग ही कहा जायेगा कि पहली जनवरी 2024 को जावलियाजी (96) ने अन्तिम स्वांस ली और इसी महीने में 2023 में उनकी धर्मपत्नी चल बसी।

एम.ए. करने के बाद जब मैं साहित्य संस्थान आ गया तब डॉ. मोतीलाल मेनारिया वहां अल्पकालीन डाइरेक्टर पद पर आसीन थे। उनके निर्देशन में वहां मैंने ब्रजराज-काव्य-माधुरी का चार हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर पाठ सम्पादन किया तब तीन प्रतियां जावलियाजी के प्रतिष्ठान में थीं।

महाराणा जवानसिंह (संवत् 1857-1895) ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। कविता में वे अपना नाम 'ब्रजराज' लिखते थे। जावलियाजी ने बड़ी उदारता के साथ मेरा सहयोग किया। ब्रजराज-काव्य-माधुरी मेरी पहली पुस्तक थी जिसका प्रकाशन सन् 1966 में हुआ।

डॉ. जावलियाजी ने पाण्डुलिपियों के संरक्षण एवं संग्रहण को लेकर बड़ा मौलिक कार्य किया। राजस्थान में कहां-कहां किन-किन प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानों में कौन-कौन सी कितनी पाण्डुलिपियां हैं, सबकी खोजखबर उन्हें रहती और जो भी अनुसंधित्सु या कि विद्वान उनके पास आता उसे हर तरह की जानकारी से पुष्ट समृद्ध करते। हर समय उठते-बैठते लोगों से बतियाते वे इस बात का अवश्य ध्यान रखते कि कहां-कहां निजी संग्रह किया हुआ है और कौन-कौन से ऐसे ग्रन्थ हैं जिनका सम्पादन किया जाना जरूरी है। ऐसे करते उन्होंने 23 से अधिक शोधात्मक पुस्तकों का लेखन कर विद्वानों को अलभ्य ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध कराई।

डॉ. जावलियाजी वर्षों तक जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह के पोथीखाने में रहे जहां अनेक इतिहास संगत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को रोशनी दी। उन्होंने राणारासो तथा खुमाणरासो जैसे दुरुह ग्रन्थों का सम्पादन किया साथ ही हस्तलिखित ग्रन्थों के केटलॉग तैयार किये।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने बताया कि सेवानिवृत्त होने के बाद तो जावलियाजी का पूरा समय ही हस्तलिखित ग्रन्थों के सम्पादन-प्रकाशन में लगा रहा और इस काल में अपने पिछले सेवाकाल से भी अधिक उपलब्धिपूर्ण कार्य कर आत्मसुख की अनुभूति की। अपने आलेखों में उन्होंने मेवाड़ से सम्बन्धित पाण्डुलिपियों का उपयोग कर अनेक महत्त्व के इतिहास-प्रसंगों का उल्लेख किया। उन्होंने अपने गहन अध्ययन तथा पैने विश्लेषण से अनेक भ्रांत धारणाओं का खुलासा किया। राजस्थान के ग्रामोद्योगों की शब्दावली पर किया गया उनका अन्वेषण स्थायी महत्त्व का है। नरोत्तमदास स्वामी के निर्देशन में उन्हें इसी कार्य पर 1968 में पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की गई। सन् 2001 में इसका विविध रेखाचित्रों के साथ प्रकाशन हुआ।

स्वामीजी के प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि उदयपुर में मैंने जब सन् 1962 में एम. ए. किया तब वे हमारे प्राध्यापक रहे और बाद में उन्होंने अपने निर्देशन में मुझे पीएच. डी. करने को कहा और मेवाड़ का लोकसाहित्य विषय पर सिनोप्सिस बनाई किन्तु किन्हीं कारणों से वह कार्य मैं नहीं कर सका परन्तु उनके हाथ की लिखी वह सिनोप्सिस मेरे पास अब भी सुरक्षित है।

दिल्ली की भारतीय इतिहास परिषद की फैलोशिप पाकर जावलियाजी ने राजस्थानी अभिलेखों के गूढ़ अध्ययन से इतिहास के अनेक नये अछूते पक्षों को उजागर किया। उनके स्थायी महत्त्व के कार्यों से जहां महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर ने उन्हें महाराणा कुम्भा पुरस्कार से सम्मानित किया वहां राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर ने अपने सर्वोच्च महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार से नवाजा। ऐसे और भी अनेक सम्मान-पुरस्कार उनकी झोली के प्रभावक बने।

यह सच है कि व्यक्ति के नहीं रहने पर ही उसका सम्यक मूल्यांकन होता है और उसका अभाव भी बुरी तरह कचोटता है। सच यह भी है कि हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह संरक्षण, अवेर-धवेर तथा पलेवण में वे बारहमास बसंत ही बने रहे।

उनके निधन के दूसरे दिन सम्प्रति संस्थान द्वारा शोकांजलि दी गई जिसका एक दर्जन से अधिक पत्रों में प्रकाशन हुआ। श्रद्धांजलि की खबर इस प्रकार थी-

डॉ. जावलिया को श्रद्धांजलि

उदयपुर। संप्रति संस्थान की ओर से मेवाड़ के प्रसिद्ध इतिहासकार और बहुभाषाविद डॉ. ब्रजमोहन जावलिया को श्रद्धांजलि दी गई और उनके योगदान का स्मरण किया गया।

संस्थान के सचिव डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि डॉ. जावलिया को याद करते हुए डॉ. महेंद्र भानावत ने उनको मृदुभाषी और मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को निभाने वाला कहा। उन्होंने कहा कि वे लेखन और अनुसंधान के प्रति आजीवन समर्पित रहे। शाहपुरा की अनेक सृजनात्मक विरासत उनके रुधिर में रही। साहित्य अकादमी सहित अनेक संस्थाओं के लिए उन्होंने अपनी अविस्मरणीय सेवाएं दीं।

इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने कहा कि महाराणा कुम्भा के संगीतराज और अन्य ग्रंथों के बारे में उनकी स्थापनाओं ने शोधार्थियों का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने मेवाड़ की व्यापारिक और व्यावहारिक शब्दावली पर जो कार्य किया, वह हमेशा याद किया जाएगा।

वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. देव कोठारी ने उनके प्राच्य विद्या के क्षेत्र में योगदान को स्मरणीय बताया और कहा कि राजस्थानी, हिन्दी और संस्कृत भाषा की अज्ञात पाण्डुलिपियों के सूचीपत्र तैयार करने में उनकी सेवाएं बहुत उपयोगी हैं। इसी आधार पर देशभर के विद्वानों ने मेवाड़ के ग्रन्थों पर अनुसंधान किए। उनको महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन सम्मान मिला और अनेक संस्थाओं ने बड़े पुरस्कार प्रदान किए। वे जयपुर स्थित महाराजा सवाई मानसिंह (द्वितीय) संग्रहालय के पोथीखाना के अध्यक्ष रहे।

वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. राजेंद्रनाथ पुरोहित ने उनके साथ अपनी सेवाओं को याद किया और उनकी स्मरण शक्ति की प्रशंसा की। इतिहासकार डॉ. चंद्रशेखर शर्मा ने उनके अप्रकाशित लेखन को समग्र रूप में सामने लाने की जरूरत बताई और कहा कि वे शोधार्थियों के लिए कोष की तरह माने जाते थे।

उनकी लिखित और सम्पादित अनेक पुस्तकें उपयोगी हैं। मेवाड़ के राजवंश के स्रोत के रूप में राणा रासो और खुमान रासो ही नहीं, मेवाड़ का 17वीं सदी का इतिहास : सइकी, बघेरा का इतिहास आदि बहुत शोध सम्मत हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 जनवरी 2024

सम्पादकीय

जन-जन में राम की स्वीकारोक्ति

'आज रो दन आणंद अयोध्या में राम पधार्‌या।' यह आरती गीत है। रामलीला का खेल जब समाप्त हो जाता है तब अन्त में दर्शकों में आरती की थाल घुमाई जाती है। दर्शक दीपक की जोत से अपने को ऊर्जावान बनाकर थाली में भेंट स्वरूप सिक्का आदि रखते हैं। यह राम के प्रति उनकी श्रद्धा एवं आस्था का चढ़ावा है।

ऐसे एक मण्डली गांव में लोगों की भावना के अनुसार महीने-महीने भर तक लीला-खेल करती पूरे गांव को लीलामय, राममय बनाती और जब विदा होती है तो पूरा गांव अश्रु वेग लिए भीगा हुआ लगता है।

रामलीला की राजस्थान में ही कई मण्डलियां प्रचलित रहीं जो स्थानीयता का प्रभाव लिये अलग-अलग अन्दाज में रामलीला का मंचन करती रहीं। इन मण्डलियों में सभी जाति के लोग भाग लेते। भाग ही नहीं लेते अपितु मुसलमान, कुमावत, वैरागी, भील जाति में से कुछ तो ऐसे हुए जिनकी स्वयं की मण्डलियां थीं जिन्होंने वर्षों तक अपने यादगार प्रदर्शनों से धूम मचाई।

खेल प्रदर्शनों में तो राम का वहीं रूप रहा पर अयोध्या तो वैसी नहीं रही। मुगलों के आक्रमणों से पूरा भारत त्रस्त हो गया तब जगह-जगह धार्मिक स्थल या तो समूल नष्ट कर दिये गये या फिर उनके ऊपर मस्जिदें बनाकर उन्हें जमींदोज कर दिया गया। अयोध्या के राम मन्दिर का भी यही हश्र रहा। बाबर द्वारा राम मन्दिर को खण्डित कर ऊपर मस्जिद बना दी गई जो बाबरी मस्जिद के नाम से जानी गई।

जहां-जहां आक्रांताओं ने भारत देश की विरासत से खिलवाड़ किया वहां-वहां बाद में उसे अंग्रेजों ने उसके साथ अपनी संस्कृति का थोपना करने में कोई कसर नहीं रखी। कई जगह उन्होंने मुगलियत के साथ अंग्रेजियत कर अपने ढंग से शासन व्यवस्था के चिन्ह छोड़े जो आजादी के बाद अब तक अनेक क्षेत्रों में हमारे जीवन के आवश्यक अंग बने हुए हैं।

यह रेखांकित करने का गौरव पक्ष है कि सन् 2014 से जब नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने तब से भारत देश जो अनेक अभारतीयता के रूपांकनों से जकड़ गया था, धीरे-धीरे भारतीयता के रूप में अपनी छवि मण्डित कर रहा है।

इनमें अयोध्या के जिस स्थल पर मुगलियत पहचान देती बाबरी मस्जिद खड़ी कर दी गई थी वह सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार पुन: अपने मूल राम मन्दिर स्वरूप में निखर पाया है।

इस राम मन्दिर की धूम न केवल भारत के प्रत्येक ग्राम शहर में मची है अपितु पूरे विश्व में इसका डंका बज रहा है। गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस में रामराज्य का जैसा वर्णन किया गया है ठीक उसी के अनुरूप वे सारे स्थल जो मानस में चर्चित हुए हैं, उनका कायाकल्प हो गया है।

यहां कविता की शक्ति की परख भी की जानी चाहिए कि काव्य की धारा सारे शास्त्रों से कई गुना शक्तिवंत होती है। सच पूछा जाय तो तुलसी के मानस ने ही रामजीवन काल को जन-जन का कण्ठ बनाया और उसकी प्रत्येक चौपाई घर-घर में जन-जन की जीवनधर्मिता को मंगल मांगल्य देने के लिए मंत्रसिद्ध ही बनी हुई है।

इस राम मन्दिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी के दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी साक्षी होंगे। पूरी अयोध्या नगरी और वे सभी स्थल जीवन्त, जाग्रत और ज्योर्तिमय हुए हैं जो राम परिजनों से सम्बन्धित रहे हैं। यही नहीं, भारत देश से बाहर से भी जिनका तब राम परिवार से नाता रहा, वहां से भी अनेक अमूल्य भेंटें पहुंच रही हैं। भेंटों की यह संख्या भी असंख्य है। तरह-तरह की ऐसी अजूबी, अनोखी, अनुपम भेंटें जो विविध जाति धर्म, सम्प्रदाय तथा शिल्पकारों ने बनाई हैं वे अन्यत्र कहीं नहीं देखी गई और न सुनी ही गई हैं।

लोकजीवन में राम इतने रच-बस गये हैं कि खुशी के अवसर पर ही नहीं, दुखद क्षणों में भी राम की उपस्थिति भवसागर से बेड़ा पार करने की होती है। राम से जुड़ी कई कहावतें, किवदंतियां, कथाएं ऐसी हैं जो राम की सार्थकता की सूचक हैं और सामान्य जीवन की निरर्थकता में भी वे लोगों के जीवन को सार्थक संबल देती हैं।

इस कलयुग में, कहा जाता है कि मानवता का क्षरण और अध:पतन ही हुआ जा रहा है जिसे हम प्रतिदिन ही देख रहे हैं वहां राम मन्दिर के बहाने त्रेतायुग की कल्पना साकार होती देखना, सुनना और उसका साक्षी होना सचमुच में महा गौरव की अनुभूति का जीवन्त स्वप्न है।

शब्द रंजन के नवें वर्ष में प्रवेश पर सभी विद्वानों, पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई।

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र
इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं-
https://thetimesofudaipur.com/shabd-ranjan/

सबसे बड़ा शब्दकोश हिन्दी का

- डॉ. कान्तिलाल यादव -

हिन्दी वैज्ञानिक भाषा तो है ही साथ ही यह लचीली, सहज, सरल और मैत्री भाषा है जो व्यावहारिक भी है और सहज अभिव्यक्ति में सक्षम भी है। हिन्दी का शब्दकोश आज विश्व का सबसे बड़ा शब्दकोश है। हिन्दी वर्णमाला अन्य भाषाओं की वर्णमाला से सबसे बड़ी है। हिन्दी को जिसमें ढालो उसमें ढल जाती है। यह वैज्ञानिक भाषा है। जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। यह संस्कृत भाषा से उपजी हुई है।

महात्मा गांधी ने हिन्दी को जनमानस की भाषा कहा था। हिन्दी हमारी मातृभाषा ही नहीं बल्कि राष्ट्रभाषा है। यह देश के बहुसंख्यक लोगों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा है जिसका अपना व्याकरण है। अपना इतिहास है। महात्मा गांधी ने 1918 में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अपना मत रखा था।

दुनिया के अनेक देशों में हिन्दी बोली जाती है। पढ़ी जाती है और समझी जाती है। हम भारतीयों के लिए मन की और दिल की बात करने की सहज एवं सरल भाषा है तो वह हिन्दी ही है। हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रीय धरोहर और गौरव का प्रतीक है। दुनिया में बसे भारतीयों को एक सूत्र में बांधने हेतु विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

शिक्षाविद् एवं भाषा विशेषज्ञ डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल के अनुसार हिन्दी भाषा विश्व में अब प्रथम स्थान पर है। भारत के अलावा नेपाल, तिब्बत, पाकिस्तान, फिलिपींस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद, अमेरिका न्यूजीलैंड, युगांडा, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, यूनाइटेड, थाईलैंड, हांगकांग, कनाडा, और जर्मनी में हिन्दी बोली भी जाती है एवं समझी भी जाती है। इन देशों में हिन्दी भाषा प्रचुर मात्रा में बोली, समझी एवं लिखी जाती है।

2023 में हिन्दी दिवस की थीम थी- 'हिन्दी को जनमत की भाषा बनाना, बगैर उनकी मातृभाषा की महत्ता को भूले।' विश्व हिन्दी दिवस 2024 की थीम -'हिन्दी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक' है। दुनिया में अनेक देशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। अमेरिका में ही देखें तो वहां लगभग 150 से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है। हिन्दी भारत की पहचान ही नहीं बल्कि विश्व में भारत को जोड़े रखने में सक्षम भाषा है।

दुनिया भर में भारत को जोड़ने एवं हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु 10 जनवरी 1974 को महाराष्ट्र के नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया था। इस महासम्मेलन में दुनिया के 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था तथा इस महासम्मेलन की अध्यक्षता तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने की थी। इसके बाद सर्वप्रथम नार्वे के भारतीय दूतावास में पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया था।

देश के 13 वें प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने कार्यकाल के दौरान वर्ष 2006 में 10 जनवरी को प्रतिवर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। हिन्दी भाषा का साम्राज्य तो बढ़ रहा है किन्तु जो मान-सम्मान हिन्दी का मन से और दिल से मिलना चाहिए वह अभी अधूरा है। हिन्दी अभी रोजगार की भाषा पूर्ण रूप से नहीं बनी है यह भी एक चिंता का विषय है। हमारी हिन्दी भाषा के कदम विश्व भाषा के रूप में तो बढ़ते जा रहे हैं किन्तु घर में राष्ट्र भाषा के रूप में सपना अधूरा है।

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ की 6 आधिकारिक भाषाएं हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत भी अपना महत्त्वपूर्ण देश के रूप में वजूद रखता है। हिन्दी को भी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने की शुरुआत प्रथम विश्व सम्मेलन के रूप में हुई थी। बाद में देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर विश्व पटल पर हिन्दी का नाम ऊंचा किया था।

हिन्दी आज लोकप्रिय भाषा के रूप में विश्व स्तर पर स्वीकार की गई है। यह सोशल मीडिया और इंटरनेट की भाषा बन चुकी है। विश्व स्तर पर दूरदर्शन, हिन्दी फिल्मों और हिन्दी पत्र पत्रिकाओं ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कोई कमी नहीं रखी है। साथ ही प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी को विश्व स्तर पर पहचान बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हिन्दी ने चीनी भाषा मंडारिन को भी पीछे छोड़ दिया है।

आज विश्व के लगभग 180 देशों में हिन्दी दिवस मनाया जाता है। वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण के रूप में हिन्दी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के ठोस कदम उठाने चाहिए।

आज समस्या यह है कि हिन्दी को हम राष्ट्रभाषा के रूप में ना मान्यता दिला पा रहे हैं और नहीं संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा बना पा रहे हैं। यह तभी हो सकेगा जब हम सभी तन मन और दिल से, कदम से कदम मिलाकर हिन्दी राष्ट्रभाषा और विश्व भाषा हेतु प्रयास करें। भाषा ही एक वह सेतु है जो विश्व को जोड़ने का पुल के रूप में कार्य करता है। तभी हमारा 'वसुधैव कुटुंबकम' का सूत्र सार्थक हो सकेगा।

ओपीएस पेंशन से वंचित अकादमियों के सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने सौंपा ज्ञापन

उदयपुर (ह. सं.)। राज्य की अकादमियों के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को ओपीएस विकल्प पत्र जमा कराने के बावजूद अब तक पेंशन पीपीओ जारी नहीं हो पाएं हैं। इससे सेवानिवृत्त कार्मिकों को आर्थिक संकट के दौर से गुजरना पड़ रहा है। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के सेवानिवृत्त कार्मिकों ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं उप मुख्यमंत्री दीयाकुमारी के नाम ज्ञापन अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) शैलेश सुराणा को सौंप कर पेंशन भुगतान शीघ्र कराने का आग्रह किया है। इस दौरान राजस्थान साहित्य अकादमी से सेवानिवृत्त डॉ. प्रमोद भट्ट, दुर्गेश नन्दवाना, रमेश कोठारी, विष्णु पालीवाल उपस्थित रहे।

ज्ञापन में बताया कि राज्य सरकार के वित्त विभाग के आदेश क्रमांक प.13(12)वित्त/नियम/2021 दिनांक 20.04.2023 के संदर्भ में राज्य की अकादमियों के सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने अपने-अपने ओ.पी.एस. विकल्प पत्र संबंधित अकादमियों में यथासमय प्रस्तुत कर दिए हैं। कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग राजस्थान सरकार के पत्रांक प.19(11)क.स./2022, दिनांक 22.06.2023 के अनुसार ओ.पी.एस. हेतु अकादमियों/विभागों के लिए रवीन्द्र मंच सोसायटी, जयपुर को ''नोडल एजेन्सी'' बनाया गया है। रवीन्द्र मंच सोसायटी जयपुर को राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने पेंशन कुलक (सेट ऑफ फार्मस), आवश्यक प्रपत्र व सी.पी.एफ. के सरकारी अंश की राशि मय ब्याज के ट्रेजरी सचिवालय, जयपुर में जमा कराकर अकादमी सचिव ने रवीन्द्र मंच को सूचना आदि प्रेषित कर दी है। ट्रेजरी जयपुर में यह राशि ई ग्रास चालान दिनांक 31.08.2023 व 13.09.2023 से जमा करवाई है। रवीन्द्र मंच में लेखाधिकारी के अभाव में पेंशन पी.पी.ओ. जारी होने व पेंशन भुगतान नहीं हो पा रहा है। इसी प्रकार रवीन्द्र मंच सोसायटी को पेंशन संबंधी आहरण-वितरण के अधिकार भी अभी तक विभाग से नहीं दिए गए है जबकि हमारी ओर से सभी आवश्यक पूर्तियां काफी समय पूर्व हो गई है।

ज्ञापन में बताया कि इन कर्मचारियों ने बैंक आदि से ऋण लेकर सरकार में राशि जमा कराई है और पेंशन के अभाव में परिवार पालन में गंभीर असुविधाओं और तकलीफों का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञापन में आग्रह किया कि रवीन्द्र मंच सोसायटी, को पेंशन आहरण-वितरण के अधिकार राज्य सरकार से प्रदान करते हुए निदेशक, कोष एवं लेखा निदेशालय, जयपुर को लेखाधिकारी नियुक्त करवाने का आदेश प्रदान करावें ताकि पेंशन सबंधी आवश्यक कार्य रवीन्द्र मंच जयपुर द्वारा यथाशीघ्र सम्पन्न हो सके।

पूर्ण शाकाहारी 15 A.D. बेकरी का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान की प्रसिद्ध सन् 1966 में स्थापित बेकरी 15 A. D. का सोमवार को झीलों की नगरी उदयपुर में पूर्व मेवाड़ राजपरिवार के सदस्य लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने शुभारंभ किया। इस अवसर पर बेकरी के निदेशक साहिल शेख भी उपस्थित थे।

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि मकर संक्रांति के पावन अवसर पर उदयपुर को यह सौगात मिली है। इससे मैं बड़ा खुश हूं। आज की तारीख में हम अक्सर एक दूसरे से पूछा करते हैं कि कॉफी पीने कहां चलें। बिस्किट खाने कहां चलें। उस सवाल का एक जवाब कहीं न कहीं इंसान को 15 A. D. के रूप में जरूर मिलेगा। हम सबको अपने घर परिवार के साथ जाना काफी पसंद है। यहां आकर कुछ चीजों को चखने और देखने का मौका मिला। इसमें कोई शक नहीं कि अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की चीजें उदयपुर में मिल रही हैं।

साहिल शेख ने बताया कि सन् 1966 में नबी अहमद ने जोधपुर में 300 स्क्वायर फीट की एक छोटी सी दुकान में इस बेकरी की स्थापना की। उच्च क्वालिटी एवं यूनिक रेसिपी से व्यवसाय में सफलता प्राप्त करते हुए 1996 में इस बेकरी की दूसरी ब्रांच हैदर बिल्डिंग, तीसरी ब्रांच सरदारपुरा, चौथी ब्रांच पावटा, पांचवीं ब्रांच राताना़डा में खोली गई। बेकरी अपनी विशिष्ट पैकेजिंग एवं उत्कृष्ट क्वालिटी की वजह से एक अलग स्थान रखती है। शेख ने बताया कि हमारे उत्कृष्ट उत्पाद में अलमण्ड फैन्तासी, पिस्ताचियो डिलाइट, रोस्टेड ड्राई फ्रूट कुकीज, साकर केक, ओपेरा केक, जर्मन चोकलेट, इटालियन ब्लैक फोरेस्ट, तीरामिसु केक और हमारे चीज केक बहुत ही युनिक रेसिपी से बनते हैं जो हमें सबसे अलग बनाते हैं।

लोकसंपदा हमारी प्राणवायु है : डॉ. विद्याविन्दुसिंह
भारत को बचाना है तो लोक को बचाना है : डॉ. राजेश
विश्वविद्यालय में लोकसाहित्य का स्वतंत्र विभाग खुले : डॉ. भानावत

उदयपुर। सुखाड़िया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की ओर से दो दिवसीय 'लोकसाहित्य एवं संस्कृति : चिंतन और चुनौतियां' विषय पर 15-16 जनवरी को राष्ट्रीय संगांष्ठी आयोजित की गई। मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. विद्याविन्दुसिंह ने कहा कि लोकसंस्कृति में लोकमंगल की भावना निहित है। लोकसंपदा हमारी प्राणवायु है जिसे सर्वप्रकारेण सहेजना होगा। लोकसाहित्य की सभी विधाओं में सबके कल्याण की कामना है।

मुख्य वक्ता डॉ. राजेश व्यास ने कहा कि लोक हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखता हुआ समष्टि की बात करता है। लोक कभी मरता नहीं, मार दिया जाता है। भारत को बचाना है तो लोक को बचाना होगा।

विशिष्ट अतिथि डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि लोकजीवन में जो कंठासीन साहित्य है वह अदृश्य एवं अलौकिकता से भरा है, वह भी हमारा विषय है। उदयपुर क्षेत्र जनजाति बाहुल्य है ऐसी स्थिति में विश्वविद्यालय में अलग से लोकसाहित्य विभाग की स्थापना हो ताकि मेवाड़ के समग्र समृद्ध लोक का सम्यक् अध्ययन हो सके।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने लोकसाहित्य को जीवंत साहित्य बताते पूरे देश में उसकी एक-सी अन्तर्धारा को उदाहरण सहित सजीव किया। विभागाध्यक्ष डॉ. नीतू परिहार ने लोकसाहित्य को जनमन का साहित्य बताते कहा कि संस्कृति समाज को जोड़ने का काम करती है। इस अवसर पर नीतू परिहार द्वारा संपादित 'लोकसाहित्य एवं संस्कृति' तथा डॉ. निर्मला राव लिखित 'समकालीन कविता में राष्ट्रीयता' पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. भारती सिंह ने की। डॉ. नीता त्रिवेदी एवं डॉ. कैलाश गहलोत ने मुख्य वक्तव्य दिया।

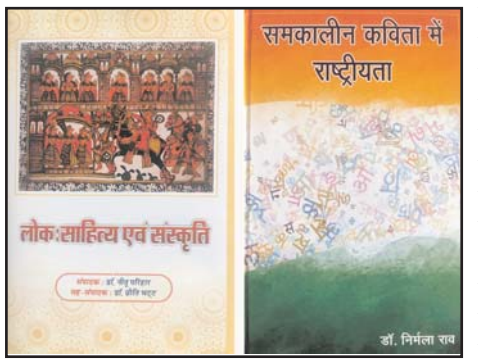

संगोष्ठी के दूसरे दिन लोक साहित्य : चिंता और चिंतन विषय पर मुख्य अतिथि प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा ने कहा कि भारत में अनुभव, ज्ञान और संवेदना की समस्त उपलब्धियों का विकास दो धाराओं या परंपराओं में हुआ है। भारत की सही पहचान लोक एवं जनजातीय भाषा, साहित्य और संस्कृति के बिना नहीं हो सकती है।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने कहा कि शास्त्र लोक को ही प्रतिष्ठित करते हैं। सभी शास्त्र लोक के ही विषयों को स्वीकारते हैं। लोकानुभव और लोकविश्वास ही संहिताओं के रूप में निबद्ध हुए हैं। डॉ. महिपालसिंह राठौड़ ने कहा कि साहित्य की विभिन्न धाराओं पर लोक का गहरा प्रभाव है। लोक साहित्य में मौलिक उपमाएं मिलती हैं जो शिष्ट साहित्य में नहीं मिलती।

नाट्यकर्मी पूनम भू ने संस्कृति में महिलाओं के योगदान को रेखांकित किया। डॉ. मदनसिंह ने कहा कि लोक बड़ी शक्ति है और उसको समझना होगा। आभार डॉ. नीतू परिहार ने ज्ञापित किया। **- डॉ. कहानी भानावत**

जनप्रतिनिधि लोकतंत्र में आई विकृतियों को दूर करें : डॉ कुसुम

जयपुर। मुक्त मंच की संगोष्ठी 'विकसित भारत और जन आकांक्षाएं' विषय पर डॉ. पुष्पलता गर्ग के सान्निध्य और डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' की अध्यक्षता में संपन्न हुई। अरुण ओझा मुख्य अतिथि थे। शब्द संसार के अध्यक्ष श्रीकृष्ण शर्मा ने

संयोजन किया। डॉ. कुसुम ने कहा कि संसाधनों के संतुलित समन्वय से भौतिक विकास तो संभव है किंतु जनभावनाओं और सामाजिक सरोकारों का विमर्श इकतरफा रह जाता है। ऐसे में हमारे जनप्रतिनिधियों को जन आकांक्षाओं के अनुरूप आमजन को सुखी, समृद्ध और खुशहाल बनाने के प्रयास करने चाहिए।

मुख्य अतिथि अरुण ओझा ने कहा कि देश में विकास अमीरों के लिए समर्पित है जबकि सस्टेनेबल विकास होना चाहिए। विकास का मॉडल तो गांधियन मॉडल ही हो सकता है ताकि गावों से लोगों का पलायन ना हो। आर. सी. जैन ने कहा कि विकसित भारत की अवधारणा और संकल्पना का कोई ब्लूप्रिंट अभी तक सामने नहीं आया है। हर कोई अपनी तरह से विकास को परिभाषित कर रहा है। आजादी के पूर्व से अब तक तुलना करें तो विकास तो अवश्य हुआ है लेकिन विषमताएं भी बढ़ी हैं।

प्रबुद्ध विचारक जी. के. श्रीवास्तव ने कहा कि विकास एक स्वतंत्र प्रक्रिया है लेकिन शासन यह देखे कि बढ़ती जनसंख्या एसेट साबित हो और संसाधनों पर बोझ नहीं बने। बढ़ती जा रही बेरोजगारी विकास की प्रक्रिया में चुनौती बनती जा रही है। इसका समाधान आवश्यक है। डॉ. सुभाष चंद्र गुप्ता का कहना था कि हमारा देश हंगर इंडेक्स और कुपोषण के मामले में निचले स्तर पर है।

संगोष्ठी को प्रो. राजेंद्र गर्ग, डॉ. पुष्पलता गर्ग, फारूक आफरीदी, ए. आर. पठान, दामोदर चिरानिया, लोकेश शर्मा, अनिल यादव, यशवंत कोठारी, कल्याणसिंह शेखावत ने भी अपने विचारों से समृद्ध किया। आभार विष्णुलाल शर्मा ने व्यक्त किया। **- श्रीकृष्ण शर्मा**

मो. फुरकान खान ने कार्यभार संभाला

उदयपुर (ह. सं.)। नॉर्थ जोन कल्चरल सेंटर पटियाला के निदेशक मो. फुरकान खान ने 15 जनवरी को पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया। मो. फुरकान खान इससे पहले 2015 से 2019 तक पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के निदेशक रहे हैं। बागोर की हवेली में किरणसोनी गुप्ता ने मो. फुरकान खान को कार्यभार सौंपा।

प्रकृति और पूर्वजों ने बहुत दिया, उसे संभालने की दरकार: कटारिया

उदयपुर (ह. सं.)। असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि प्रकृति और पूर्वजों ने मेवाड़ को बहुत कुछ दिया है, अगर हम उसे ही संभाल लें तो उदयपुर प्राकृतिक सौंदर्य, जैव विविधता और हेरिटेज के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा डेस्टिनेशन बन जाए। कटारिया रविवार मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में उदयपुर बर्ड फेस्टिवल के समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्रकृति ने पहाड़ियां, हरियाली, नदी तालाब दिए, पूर्वजों ने पीढ़ियों की सोच रखते हुए हर गांव में जलाशयों का निर्माण कराया। राजसमंद और जयसमंद झील तत्कालीन शासकों की पीढ़ी-दर-पीढी जल आवश्यकता को लेकर रखी गई दूरदृष्टि का उदाहरण है। प्राकृतिक समृद्धता के कारण ही यहां जैव विविधता भी है। हजारों किलोमीटर दूर से प्रवासी पक्षी यहां आते हैं। मेनारवासियों को प्रकृति और पक्षियों से प्रेम बहुत पहले से रहा है। तभी तो मेनार पक्षी विलेज के रूप में विश्व में ख्याति प्राप्त कर चुका है। कटारिया ने कहा कि इन विरासतों को संरक्षित करने के लिए युवा पीढ़ी की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जब तक युवा इनका महत्त्व नहीं समझेंगे इन्हें बचाया नहीं जा सकता।

समारोह में सांसद अर्जुन मीणा, उदयपुर शहर विधायक ताराचंद जैन, वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के सीईओ रविसिंह, राजपालसिंह, सेवानिवृत्त प्रधान वन संरक्षक एन. सी. जैन आदि उपस्थित थे।

प्रारंभ में संभागीय मुख्य वन संरक्षक आर. के. सिंह, मुख्य वन संरक्षक आर. के. जैन, उप वन संरक्षक सुगनाराम जाट, उप वन संरक्षक (वन्यजीव) अरूणकुमार डी सहित अन्य अधिकारियों ने राज्यपाल सहित सभी अतिथियों को उपरणा ओढ़ाकर, केप पहनाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम में पूर्व सीसीएफ राहुल भटनागर, सेवानिवृत्त आईएएस विक्रमसिंह, डॉ पुष्पा खमेसरा, शरद अग्रवाल, देवेंद्र श्रीमाली सहित बड़ी संख्या में पर्यावरण प्रेमी, विभागीय कार्मिक तथा आमजन उपस्थित थे।

गीतांजलि में आर्मी डे मनाया

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में आर्मी डे पर हवेली परिवार की ओर से प्रमाण्य-7 का आयोजन किया गया। हवेली परिवार के प्रद्युमनसिंह राठौड़ एवं संजय नागदा ने बताया कि 15 जनवरी 1952 को भारतीय आर्मी को ब्रिटिश आर्मी ने कमान सौंपी थी। इसके उपलक्ष्य में भारतीय सेना दिवस का आयोजन किया जाता है। प्रमाण्य भारतवर्ष का एक मात्रा कार्यक्रम है जो शहर के आम नागरिकों द्वारा आर्मी के लिए आयोजित किया जाता है। इससे पूर्व संजीवनी बालविकास संस्थान के विद्यार्थी लक्जरी गाड़ियों और बुलेट रैली में जवानों को आर्मी बेसकैंप से एस्कॉर्ट करके गीतांजलि मेडिकल कॉलेज लेकर आए।

जीएमसीएच के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर ऋषि कपूर ने बताया कि कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल एन. के. सिंह, आर्मी बेसकैंप के चीफ कमांडेंट एवं गीतांजली ग्रुप के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल ने दीप प्रज्वलन किया। अंकित अग्रवाल ने हवेली परिवार के इस आयोजन को उत्कृष्ट बताते हुए कहा कि आर्मी को सम्मान देना देश के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है और सभी देशवासियों को इस दिशा में कुछ करना चाहिए।

हवेली परिवार के हेमंत आमेटा ने आर्मी के जवानों, शहर की विशिष्ट नागरिकों, समाजसेवियों का स्वागत किया। लेफ्टिनेंट जनरल एन. के. सिंह ने आम जनता के साथ सेना के अदम्य साहसी कार्यों का शोर्यगान साझा किया। कार्यक्रम में गीतांजली ग्रुप के सीएचआरओ डॉ. राजीव पंड्या, हवेली परिवार के राजेश माली, राहुल व्यास, मुकेश चौधरी, हरीश मेनारिया, ऋतुराज गर्ग, मनोज शर्मा आयुष लोढ़ा उपस्थित थे। संचालन आरजे काव्य भट्ट ने किया।

डॉ. मेवाड़ का तनाव प्रबंधन पर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज

उदयपुर (ह. सं.)। मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने जनसमूह को तनाव प्रबंधन का पाठ पढ़ाकर दुनिया में पहली बार तनाव प्रबंधन से संबंधित गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ने विश्व में पहली बार तनाव प्रबंधन की श्रेणी को शामिल किया है।

डॉ. लक्ष्यराजसिंह ने कहा कि दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी तनाव से ग्रसित है जबकि इसका स्थायी समाधान खुद के ही मन-मस्तिष्क में मौजूद है। युवाओं सहित हर वर्ग को यह बात आत्मसात करनी होगी कि असफलता के बाद भी सफलता के द्वार हमेशा खुले रहते हैं। हार के बाद जीत की उम्मीद भी हमेशा जिंदा रहती है। उल्लेखनीय है कि डॉ. लक्ष्यराजसिंह पिछले 6 साल में समाजसेवा,- पर्यावरण संरक्षण, महिला स्वच्छता प्रबंधन जैसे विषयों पर 8 गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित कर चुके हैं।

बाजार / समाचार

पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा द्वारा 185 सैन्य अस्पताल में निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा द्वारा दो दिवसीय निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर मिलिट्री हॉस्पिटल उदयपुर में आयोजित किया गया। इसका लैंप लाइटिंग कर शुभारंभ

ब्रिगेडियर विशाल नय्यर कमांडर और उनकी पत्नी आर्मी कैंट उदयपुर और कर्नल यादवेंद्रसिंह यादव कमांडिंग ऑफिसर मिलिट्री हॉस्पिटल ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में साई तिरूपति यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. जे. के. छपरवाल तथा रेडिलॉजी विभागाध्यक्ष हरिराम मौजूद रहे।

इस अवसर पर पिम्स हॉस्पिटल के चेयरमैन अशीष अग्रवाल ने भारतीय सेना का आभार जताते हुए कहा कि हमारे हॉस्पिटल का ये सौभाग्य है कि भारतीय सेना का विश्वास हमारे डॉक्टरों व अत्याधुनिक मशीनरी पर है जिसके फलस्वरूप सेना की ओर से समय-समय पर निशुल्क कैंप लगाने का मौका दिया जाता है। ये बहुत खुशी की बात है कि हमारा हॉस्पिटल देश की सेवा में कार्यरत सैनिकों का इलाज उच्च स्तरीय तकनीक के माध्यम से कर उनको लाभ दे रहा हैं।

नेत्र चिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नितिन सलारिया के नेतृत्व में निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. संध्या, डॉ. श्रिया, डॉ. आर्जो, डॉ. करीना, जयप्रकाश त्यागी तथा टेक्निकल स्टाफ आशीष, मनखुश, निर्मला तथा खुशबू व पिम्स की पूरी टीम ने लगभग 322 देश के वीर सैनिक व उनके परिवार का बखूबी इलाज किया। कैंप के आयोजन में कॉर्डिनेटर की भूमिका जयप्रकाश त्यागी रेडियोलॉजी इंचार्ज ने निभाई।

जिंक की चार इकाइयां सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता समूह की सीसा, जस्ता और चांदी उत्पादक कंपनी हिंदुस्तान जिंक ने नागपुर में आयोजित गुणवत्ता अवधारणाओं, एनसीक्यूसी पर 37 वें राष्ट्रीय सम्मेलन में उत्कृष्टता की उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त कर 4 इकाइयों ने पुरस्कार प्राप्त किये। क्वालिटी सर्कल फोरम ऑफ इंडिया (क्यूसीएफआई) नागपुर चैप्टर द्वारा श्री रामदेवबाबा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट के सहयोग से

आयोजित इस कार्यक्रम में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, मंत्री भारत सरकार नितिन गडकरी मुख्य अतिथि थे।

2200 से अधिक क्वालिटी कॉन्सेप्ट टीमों और 12 हजार से अधिक प्रतिनिधियों की भागीदारी वाले इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में, जिंक की चार व्यावसायिक इकाइयों ने विभिन्न श्रेणियों में शीर्ष सम्मान हासिल किया। राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स की इकाई से, सिंदेसर खुर्द माइन की टीम पैलेन टीम विशिष्ट पुरस्कार मेरिटोरियस अवार्ड, राजपुरा दरीबा माइन अचीवर्स को एक्सीलेंस अवार्ड, जबकि शस्त्रों टीम को मेरिटोरियस अवार्ड मिला। दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्प्लेक्स में मेटल क्रशर और एफएफ चैलेंजर्स दोनों ने प्रतिष्ठित एक्सीलेंस अवार्ड जीता। जावर ग्रुप ऑफ माइंस में, जावर, विद्युत और नॉर्टेक की टीमों को उनके असाधारण योगदान के लिए एक्सीलेंस अवार्ड, रामपुरा अगुचा में, रैम गीक और आगुचा विजनरीज दोनों को सम्मानित एक्सीलेंस अवार्ड प्राप्त हुआ, जिंक स्मेल्टर देबारी में, एमसीटीपी मेवरिक्स ने पार एक्सीलेंस अवार्ड हासिल किया, जबकि जेडई इनोवेटर्स ने एक्सीलेंस अवार्ड प्राप्त किया।

एक्सीलेंस एवं पार एक्सीलेंस अवार्ड दोनों से मान्यता प्राप्त टीमें अब गुणवत्ता अवधारणाओं पर आगामी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीक्यूसी) में कंपनी का प्रतिनिधित्व करने के लिए पात्र हैं। नवाचार, उत्कृष्टता और सतत विकास की संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ, यह मान्यता न केवल गुणवत्ता के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है बल्कि हिंदुस्तान जिंक को उद्योग में अग्रणी के रूप में भी स्थापित करती है।

एशियन पेंट्स ने दिया 'आर्ट' को बढ़ावा

उदयपुर (ह. सं.)। एशियन पेंट्स ने स्टार्ट इंडिया फाउंडेशन के साथ मिलकर राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ स्कूल में प्रोजेक्ट स्पर्श के जरिए 'आर्ट' को बढ़ावा दिया है। स्पर्श का मकसद दृष्टिहीन बच्चों तक आर्ट का जादू पहुँचाना है, जिससे वे इसे पूरी तरह से एक नए दृष्टिकोण से अनुभव कर सकें। राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ में एक स्कूल है जो पांच दशकों से अधिक समय से दृष्टिहीन छात्रों के जीवन में बदलाव ला रहा है। एशियन पेंट्स ने स्टार्ट इंडिया फाउंडेशन के साथ मिलकर 'टैक्टाइल म्युरल्स' बनाकर स्कूल में एक आर्टिस्टिक टच को जोड़ा है। टेक्टीलिटी की यह सेन्सैशन एशियन पेंट्स के टेक्सचर्ड पेंट्स की रॉयल प्ले रेंज के जारिए प्राप्त की जाती है, जो सरल सतहों को टैक्टाइल भाषा में बदल देती है जिसे छात्र छू सकते हैं और महसूस कर सकते हैं। यह इनिशिएटिव इन बच्चों के स्कूल में उनके जीवन को सार्थक तरीके से छूने पर फोकस करता है, जो उनमें से कई लोगों के लिए दूसरे घर की तरह है। स्पर्श के माध्यम से, उनका मकसद है कि बच्चों को नए तरीकों से आर्ट का अनुभव करने के तरीकों को बढ़ावा दें, जबकि वे राजस्थान के वाइब्रन्ट और कल्चरल हेरिटेज पर आधारित म्युरल के डिज़ाइन के माध्यम से अपने प्राइड को शेयर करें।

मेवाड़ की खनिज संपदा समृद्धि की पर्याय

उदयपुर। खनिज संसाधन, खदान और धात्विकी के आर्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व पर यहां सुखाड़िया विश्व विद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें वक्ताओं का मत था कि दक्षिण राजस्थान अपनी खानों के कारण संपूर्ण एशिया में समृद्धि का सूचक रहा है। संसार के व्यापारियों एवं धातुविदों की दृष्टि इस क्षेत्र के जावर, दरीबा, आगुचा आदि खानों पर रही और हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, सिंध आदि के व्यापारी मेवाड़ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का व्यापार कर संसार की औद्योगिक और सामाजिक प्रगति में सूत्रधार बने।

इस संगोष्ठी के प्रायोजक आईसीएसएसआर, आरएसएमएमएल, वंडर सीमेन्ट एवं हिन्दुस्तान जिंक थे। उद्घाटन सत्र में पद्मश्री से अंलकृत प्रसिद्ध धात्विक इतिहासकार प्रो. शारदा श्रीनिवासन ने कहा कि धातु केवल धन ही नहीं, मानवीय संस्कृति के उन्नति के बोधक भी है। धातु हमारे अलंकरण, मूर्ति, द्वार आदि के लिए उपयोगी रहे और भारत में हर युग में धातु का महत्व रहा। इतिहास, हमारे व्यापार और संबंधों को भी यदि परिभाषित करता है, तो उसके मूल के धातु और धन ही है। मेवाड़ की धरती इसका पर्याय है।

प्रारम्भ में संगोष्ठी समन्वयक डॉ. पीयूष भादविया, (सहायक आचार्य, इतिहास विभाग) ने खनिज, धातु और धातु शोधक तकनीक विषय पर संगोष्ठी की उपयोगिता बताई। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने मेवाड़ को धात्विक खनिज सम्पदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आगूचां, भूखिया (बांसवाड़ा) आदि में प्राचीन काल से ही

हो रही खनन गतिविधियों को इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि धात्विक समृद्धि के कारण ही मेवाड़ ढाई हजार वर्षों तक आक्रमणकारियों के लिए रण बना रहा। इस क्षेत्र के चर्चे बसरा के सौदागर 8 वीं सदी में कर रहे थे।

विशिष्ट वक्ता श्रीलंका की प्रो. चुलानी रामबुकवेला ने कहा कि राजस्थान की खनिज सम्पदा पर संसार भर की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। लंका, कर्नाटक आदि के अभिलेखीय प्रमाण धातु और सम्बन्धों को समझने के लिये बडे उपयोगी हैं।

मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल कपूर ने कहा कि धातु की उपलब्धि और समृद्धि, देशों की उन्नति को परिभाषित करती है, कोहिनूर एक उदाहरण है। खाने हमें समृद्ध बनाने वाली रही है। यह विषय हमें नई पीढियों को पढाने चाहिए, क्योंकि यह आत्मनिर्भरता के सुन्दर उपाय है।

अध्यक्षता कर रही सुविवि की कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा ने कहा कि धातु और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि वे हमारे दैनिक जीवन से जुडे हुए है। धातु से किसी को अलगाव अच्छा नहीं लगता है। मेवाड़, धातु के मूल्य को समझता है और इसी दृष्टि से इस संगोष्ठी का महत्व है। इसकी चर्चा और महत्व आने वाला समय सिद्ध करेगा।

संगोष्ठी की उपयोगिता को विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने प्रतिपादित की और देश-विदेश से आने वाले शोधार्थियों, अध्येताओं का स्वागत किया। डॉ. जीवन सिंह खरकवाल ने भारत में उपलब्ध खदानों और खनिजों का सुंदर विवरण दिया और कहा की 24 कैरेट की मान्यता सिंधु घाटी ने संसार को दी है। इस अवसर पर डॉ. पीयूष भादविया द्वारा संपादित 'एनिमल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री', 'भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी' तथा संगोष्ठी की स्मारिका का विमोचन किया गया।

इस संगोष्ठी में अर्मेनिया की डॉ. नायरा मर्कचयन, काठमांडू (नेपाल) की प्रो. पूनम आर. एल. राणा, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुकवेला, नलिन जयसिंहे सहित भारत के 14 राज्यों के प्रतिनिधियों की भागीदारी रही। बाद में इतिहासकारों ने जावर और चित्तौड़गढ़ का भ्रमण भी किया।

-डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू

काठमांडू में इंदिरा आईवीएफ का पहला अंतरराष्ट्रीय अस्पताल शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। इंदिरा आईवीएफ ने नेपाल के काठमांडू में अपने अस्पताल के उद्घाटन के साथ अपने अंतरराष्ट्रीय विस्तार की घोषणा की। यह कंपनी का वैश्विक बाज़ार में पहला कदम है जो वैश्विक स्तर पर चर्चित इक्विटी फर्म, ईक्यूटी के समर्थन से इसके अगले चरण के विकास को गति प्रदान करेगा। इंदिरा आईवीएफ अपनी विशेषज्ञता को दक्षिण-पूर्व एशियाई, मध्य-पूर्वी, यूरोपीय और अफ्रीकी देशों तक ले जाना चाहता है।

इंदिरा आईवीएफ के प्रबंध निदेशक एवं सह-संस्थापक नितिज मुर्डिया ने कहा कि हमारा दृष्टिकोण और मिशन है, बांझपन को खत्म करना और हम अपनी सेवाओं का विस्तार करने के लिए सक्रिय रूप से वैश्विक बाजारों की

तलाश कर रहे हैं। इंदिरा आईवीएफ के मुख्य कार्यकारी और सह-संस्थापक, डॉ क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि नेपाल में प्रजनन दर में लगातार गिरावट देखी गई है जो 2023 में प्रति महिला जन्म दर 1.799 के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गई है, जबकि 2019-21 में भारत में प्रति महिला 2.0 का जन्म दर्ज किया गया था। नेपाल में प्रवेश करने वाले भारत के पहले संगठित असिस्टेड प्रजनन प्रौद्योगिकी (एआरटी) खिलाड़ी के रूप में, इंदिरा आईवीएफ ने बढ़ती मांग को पूरा करने और परिवारों को सुलभ प्रजनन समाधान प्रदान करने के लिए देश भर में पांच और क्लीनिक स्थापित करने की योजना बनाई है। ईक्यूटी के पार्टनर आशीष अग्रवाल ने कहा कि बांझपन का मुद्दा दुनिया भर में बढ़ रहा है और अब यह एक प्रमुख स्वास्थ्य देखभाल मुद्दा बन गया है।

एचडीएफसी का ग्रामीण लोन मेला

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक, एचडीएफसी बैंक ने बूंदी में ग्रामीण लोन मेला आयोजित किया। इस पहल का उद्देश्य बूंदी और पश्चिमी राजस्थान के आसपास के

जिलों के ग्रामीण इलाकों में गहराई से प्रवेश करना है, जिससे एचडीएफसी बैंक के उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला ग्राहकों को आसानी से उपलब्ध हो सके। छोटे और सीमांत किसान, किसान उत्पादक संगठन, डेयरी किसान, व्यापारी, छोटे दुकानदार और परिवहन वाहन ग्राहक, ग्रामीण ऋण मेले के प्रमुख लाभार्थियों में से थे, जिसमें लगभग 10,000 लोगों ने भाग लिया। इस पहल का उद्देश्य क्षेत्र के सभी व्यक्तियों तक कृषि, एमएसएमई, वाहन, परिवहन उपकरण और स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं के लिए ऋण उत्पादों की एक श्रृंखला तक आसान पहुंच प्रदान करवाना था। एचडीएफसी बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री भावेश ज़वेरी ने भी मेले में भाग लिया।

किआ की नई सॉनेट लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी प्रीमियम कार निर्माता, किआ ने अपनी सबसे प्रीमियम कॉम्पैक्ट एसयूवी - नई सॉनेट को देशभर में 7.99 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होने वाली विशेष प्रारंभिक कीमत पर पेश किया है। दिसंबर 2023 में पेश किए गए, किआ के दूसरे सबसे ज्यादा बिकने वाले इनोवेशन के इस नवीनतम संस्करण में 25 सुरक्षा सुविधाएं दी गई हैं, जिसमें 10 ऑटोनॉमस सुविधाओं वाला उत्कृष्ट एडैस और मजबूत 15 हाई-सेफ्टी विशेषताएं शामिल हैं। इस वाहन में 70 से अधिक कनेक्टेड कार सुविधाएं हैं, जैसे कि 'फाइंड माइ कार विद एसवीएम', जो सॉनेट को सबसे आरामदायक ड्राइव बनाने के लिए कार के आसपास का दृश्य प्रदान करता है और हिंग्लिश कमांड देता है। नई सॉनेट 19 अलग-अलग वेरिएंट में अपनी उपलब्धता के साथ विविध प्रकार के ड्राइविंग अनुभव प्रदान करती है, जिसमें 9.79 लाख रुपये से शुरू होने वाले 5 डीज़ल मैनुअल वेरिएंट भी शामिल हैं। 10 ऑटोनॉमस फंक्शंस की विशेषता वाला सेगमेंट का बेस्ट एडैस लेवल 1, डीज़ल और पेट्रोल दोनों इंजन्स के लिए टॉप-ऑफ़-द-लाइन वेरिएंट में उपलब्ध है। पेट्रोल में जीटी लाइन और एक्स-लाइन वेरिएंट की कीमत क्रमश: 14.50 और 14.69 लाख रुपये, और डीज़ल की कीमत 15.50 और 15.69 लाख रुपये है।

फिनो बैंक की राजस्थान में विस्तार की योजना

उदयपुर (ह. सं.)। फिनो पेमेंट्स बैंक अपनी बैंकिंग सेवाओं का विस्तार राजस्थान के सभी 33 जिलों में करने की योजना बना रहा है। यह बैंक टेलीकॉम शॉप्स, जनरल प्रोविजन स्टोर्स आदि की मदद से डिजिटल बैंकिंग सेवाएं प्रदान करता है, क्योंकि ये स्थान ग्राहक के करीब स्थित होते हैं, और यहाँ तक ग्राहक आसानी से पहुँच पाते हैं। यह जानकारी फिनो पेमेंट्स बैंक के ईवीपी हिमांशु मिश्रा ने दी। इस अवसर पर फिनो पेमेंट्स बैंक के जोनल हेड संजय सिंह, रीजनल हेड श्यामल यादव, डिस्ट्रीब्यूटर राज मेनारिया भी मौजूद थे।

हिमांशु मिश्रा ने कहा कि आज लोगों को सरल, सुविधाजनक और सुरक्षित बैंकिंग सेवाओं की जरूरत है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए फिनो बैंक ने देश में 15 लाख से ज्यादा छोटे व्यापारियों के साथ साझेदारी की है। हमने उन्हें असिस्टेड डिजिटल बैंकिंग सेवाएं शुरू करने के लिए माईक्रो एटीएम, और एईपीएस डिवाईस देकर बैंकिंग आउटलेट चलाने में समर्थ बनाया है। ये शॉप लंबे समय तक खुली रहती हैं, और यहाँ हमेशा पैसे उपलब्ध रहते हैं। साथ ही लोग इन्हें जानते हैं, और इसलिए इन पर विश्वास करते हैं, इसलिए हमारे इन पॉइंट्स को वो स्वीकार करते हैं। ग्राहक यहाँ आकर बैंक खाता खुलवा सकते हैं, और डिजिटल बैंकिंग करना शुरू कर सकते हैं।

मिश्रा ने कहा कि बैंकिंग के फायदे प्राप्त करने के लिए हम आम जनता और अपने व्यापारियों से सुरक्षित रूप से बैंकिंग करने का आग्रह करते हैं। जालसाजों के जाल में न फंसें। अपनी व्यक्तिगत जानकारी, जैसे यूजर आईडी, लॉगइन का पासवर्ड, ओटीपी, डेबिट-क्रेडिट कार्ड का विवरण, जैसे पिन, सीवीवी, एक्सपायरी की तारीख एवं अन्य गोपनीय जानकारी किसी के साथ भी साझा न करें। इसके लिए सतर्क व सावधान रहें, हमेशा।

संजय सिंह ने कहा कि हमसे राजस्थान में 35,000 से ज्यादा मर्चेंट पॉइंट्स और उदयपुर में लगभग 800 मर्चेंट जुड़ चुके हैं। राज्य की 75 प्रतिशत से ज्यादा आबादी गाँवों में निवास करती है, जहाँ बैंकिंग की पहुँच कम है। इन ग्राहकों को सेवाएं देने में हमारे मर्चेंट महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शहर और राज्य में ग्राहकों तक पहुँचने के लिए हम अगले 12 से 18 महीनों में अपने नेटवर्क में 50 प्रतिशत वृद्धि करने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि फिनो बैंक प्वाईंट पर आकर लोग नया बैंक खाता खुलवा सकते हैं। तुरंत डेबिट कार्ड प्राप्त कर सकते हैं। पैसे जमा, निकाल या ट्रांसफर कर सकते हैं तथा बिल का भुगतान कर सकते हैं। इसके अलावा हम थर्ड पार्टी उत्पाद भी प्रदान करते हैं, जिनमें जीवन बीमा, सामाप्य बीमा, मोटर बीमा, गोल्ड लोन का रिफरल, पैन एप्लीकेशन और आधार सेवाएं शामिल हैं।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, ज्ञानशाला उदयपुर द्वारा ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन केंद्र के निर्देशानुसार महिला अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र में दोपहर 2 से 4 के बीच किया गया। मुनि सिद्धप्रज्ञजी के मंगल पाठ से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। लिफाफा सभाध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने तीनों स्थानीय संस्थाओं के अध्यक्ष-मंत्री, प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियो की उपस्थिति में खोला।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक प्रतिभा इंटोदिया द्वारा एसएसबी - 1 के तीन ग्रुप, एसएसबी -2 के तीन ग्रुप, एसएसबी -3 के दो ग्रुप, एसएसबी - 4 का एक ग्रुप एवं एसएसबी - 5 के दो ग्रुप बनाकर किया गया। शिशु संस्कार भाग 1 में कुल 28 ज्ञानार्थी ने परीक्षा दी जिसमें से एक बच्चे ने राजनगर ज्ञानशाला में परीक्षा दी एवं एक ज्ञानार्थी की परीक्षा अमेरिका से ऑनलाइन ली गई। शिशु संस्कार भाग 2 में 19 बच्चो ने परीक्षा दी, जिसमें से एक ज्ञानार्थी ने गंगापुर ज्ञानशाला में परीक्षा दी। शिशु संस्कार भाग 3 में 11 बच्चो की परीक्षा ली गई। शिशु संस्कार भाग 4 में 8 बच्चो की परीक्षा ली गई। शिशु संस्कार बोध भाग 5 में 11 बच्चो की परीक्षा ली गई एवं साउथ दिल्ली के एक बच्चे की परीक्षा ली गई। कुल 26 प्रशिक्षिकाओं ने 78 ज्ञानार्थियो की परीक्षा नियत समय अवधि में पूर्ण की।

इस अवसर पर सभा मंत्री विनोद कच्छरा, ते.यु.प. अध्यक्ष विक्रम पगारिया, मंत्री भूपेश खमेसरा, म.मं. अध्यक्षा सीमा बाबेल, मंत्री ज्योति कच्छारा, नियोजक मंडल के यु.प. सदस्य अजीत छाजेड़, ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता बैंगानी, एरिया प्रभारी पुष्पा नांद्रेचा, आशा सुराणा, बसंत कंठालिया, मैनेजमेंट प्रभारी चंद्रा खोखावत, प्रशिक्षिकाएं सुनीता नंदावत, सुशीला पोरवाल, मीना सिंघवी, मीना नांद्रेचा, मंजू फतावत, प्रेक्षा जैन, तारा कच्छारा, डिंपल सिंघवी, ममता पोरवाल, सीमा मांडोत, टीना आच्छा, कंचान मादावाला, गीता चोर्डिया, कविता बडाला, चंद्रा पोखरणा, कांता सिंघवी, कमला कंठालिया, लाड कंठालिया उपस्थित रहे। सभी अभिभावकों, प्रशिक्षिकाओं एवं बच्चों के सांझे प्रयत्नों ने ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा के आयोजन को सफल बनाया।

आज रो दन आणंद.....

(पृष्ठ एक का शेष)

सन् 1945 से 1952 के बीच मैं अपनी मां के साथ अपने गांव कानोड़ से बाप-दादा के छोटे से गांव अरनिया जाया करता था और सप्ताह-दो सप्ताह रहता था, तब पटेल हेमाबा, भेराबा की चौपाल-धूणी पर कई लोग जब जाओ, तब ही बैठे तापते, तमाखू पीते मिल जाया करते थे।

मैं उनकी आपसी बतरस को बड़े ध्यान से सुना करता था। वहीं पता लगा कि कोई भी फसल पकने पर पहली बार उसे राम के नाम खेत से निकाल स्वयं उपभोग नहीं करते हैं बल्कि धर्मार्थ अन्यों के लिए निकालते हैं। गेहूं, मक्की, ज्वार, बाजरा, चीणा जैसी फसल का आंशिक हिस्सा उसके मूल डंठल सहित खेत में ही खड़ा छोड़ देते हैं ताकि कोई भी पंखेरू चीड़ा-चीड़ी उसे अपना चुग्गा बना सके। छोड़ते समय वे जोर-जोर से उनको हेला भी देते-कहते-

रामजी रा चीड़ा, रामजी रा खेत।
आओ रा चीड़ा, खाओ धप पेट।।

अर्थात् रामजी के सभी चीड़ा-चीड़ी और रामजी के ही सारे खेत। सभी चीड़ा-चीड़ी आओ, भरपेट खाओ। यहीं पूरे गांव की गायें चरने के लिए चोपे पर इकट्ठी होतीं। बचपन से गायें चराती-चराती साठ वर्षीय बुढ़िया गांव वालों के लिए 'गायां मां' ही बनी हुई थी। छोटे-बड़े सभी उसे इसी नाम से जानते थे। चोपे से ठीक समय वह सारी गायों को चराने के लिए छापरड़े ले जाती और संध्या को जब गायें आतीं तो धूल भरा आकाश गोधूलि का समय सार्थक करता लगता।

एक दिन मैं अपनी गाय चोपे छोड़ भलावणी देता गायां मां से पूछ बैठा- मां, गांव की इतनी सारी गायों को घेरकर ले जाना और वापस सुरक्षित लाना हर एक के बूते की बात नहीं है। गायें भी कई तरह की रींडी-भींडी, छालर-मोगर, मारकणी, भेटी देणी, बाड कूद फसल बिगाड़नी, हरियावड़ी तथा कई खोट की होती हैं। मां अपने हाथ में पकड़े लट्ठ को आकाश की ओर ऊंचा करती बोली- हरियावड़ी गाय के गले से लेकर दोनों पांवों के बीच तक का लकड़ी का मोटा 'राम डींगरा' बांध देते हैं। यों इशारों और आंकड़ बोली से सभी गायें मेरे इशारें को समझ जाती हैं। नहीं समझने पर हाथ में रखा 'राम लट्ठ' सब पर धाक जमाये रखता है। इसका जोर का एक सौटा पड़ जाये तो सब ठिकाने आ लगती हैं। कहावत भी है- 'मार आगे भूत भागे।' अर्थात् लट्ठ की मार-वार से तो गाय क्या भूत तक भागते नजर आते हैं। वैसे सबका रखवाला राम है- 'राम राखे एने कोण मारे।' उम्र के अनुसार रामली, रामीबाई, रामी भाभी, रामा भाभा, राम्या, रामल्या, नानोरामो, रामलाल, रामलला, रामशंकर, राम बा, रामरसिया जैसे नामों से कोई गांव अछूता नहीं मिलेगा।

कहना नहीं होगा कि राजस्थानी आदिवासी जीवन संस्कृति और कला के किसी पक्ष का छुअन अथवा स्पर्श भगवान राम के बिना अधूरा है। कोई त्यौहार, उत्सव अथवा उमंग का अवसर हो, घर की लिपाई-पुताई-सफाई हो, पशुओं को सजाने-संवारने का मौका हो; राम का नाम, राम के छप्पे, छापे और राम भगवान से सम्बद्ध मांडणे, थापे मुलकाते मिलेंगे। राम-रज हड़मची घर-बाहर की शोभा ही नहीं बनती, गायों, बैलों के सींग और शरीर तक उसके रंग-थापों से रंगे-थपे जाकर शोभित होते हैं।

राजस्थान में टिड्डीदलों की फसल बर्बादी बहुप्रसिद्ध रही है। टिड्डी समूह रूप में आक्रामक तेवर लिए किसी खेत पर टूट पड़ता है और देखते-देखते पूरे खेत की खड़ी फसल चौपट कर देता है। छोटी ऊंदरी के कालाजी-गोराजी देवरे पर केसोजी ने बताया कि टिडुए मारवाड़ में बहुतायत में देखे जाते हैं। इसीलिए उधर उनके गीत मिलते हैं। एक गीत में टिडुए से विनती की गई है कि सब कुछ चौपट कर दिया है। फसलें की फसलें बरबाद हो गई हैं। मोठ बाजरे का कहीं नामो-निशा बाकी नहीं रहा। छोटे-छोटे बालक बिलख रहे हैं। खाने को तरस रहे हैं अत: टिडुए तुम मेहरबानी कर इस देश से चले जाओ। भूलकर भी कभी मारवाड़ की धरती मत देखना। गीत की इन पंक्तियों में करुणा का रुआंसीभरा स्वर जब कानों में पड़ता है, तब श्रोता भी अपने को रोक नहीं पाता है। भीगे आंसुओं से वह भी अनुनय विनय करता पाया जाता है-

म्हारा टिडुआ रे.... टिडुआ रे....
फेर मती आजो भोली मारवाड़ में
मोठ भी खाग्यो टीडु, बाजरो भी खाग्या
खाग्यो म्हारे नानड़िया रो नूर म्हारा टिडुआ रे....

इसीलिए रेगिस्तान का यह टिडु मेवाड़ में 'रामजी का घोड़ा' नाम से आदरित है। इस क्षेत्र में इंद्रदेव के कुपित होने से कई अकाल पड़े हैं, पर टिडुओं ने कभी इस क्षेत्र को बरबादी नहीं दी। कोई दल भी आक्रामक रूप में नहीं देखा गया। यदा-कदा कोई टिडु कभी उड़ता आ भी जाता है तो सभी प्रसन्न हो शुभ मानते हैं।

रामजी के घोड़े की तरह इधर रामदेव बाबा का घोड़ा चर्चित रहा है। प्रसिद्धि है कि रामदेवजी अपने घोड़े पर सवार हो इधर से निकल रहे थे, तब किसी भक्त पर संकट आया सो वे अपने घोड़े को उसके चरवादार जरगा के भरोसे छोड़ कह गये कि तत्काल लौट रहा हूं। जरगा घोड़े के साथ खड़ा-खड़ा उनकी बाट जोहता रहा पर रामदेवजी नहीं लौटे। घोड़ा और जरगा खड़े-खड़े कंकाल हो गये। रामदेवजी को अचानक स्मरण आया। भूल का अहसास हुआ तो लौटे। देखा तो दोनों कंकाल रूप में मिले। दोनों को उन्होंने सरजीवित किया और जरगा की चाह के अनुसार उस पूरे पहाड़ी परिक्षेत्र में धूणी कायम कर उसका नाम ही जरगा रख दिया तब से वहां जरगाजी का मेला लगता आ रहा है। रामदेवजी के साथ जरगा का नाम भी अमर बना हुआ है। सब राम में समाविष्ट हैं। राम-नाम सबमें बीज-मंत्र है जो अपने में सर्वथा पूर्ण है। बीज निरन्तर फूलता, फूटता विकसित होता है। समग्र सृष्टि इसी राम-नाम से संचरित एवं संचालित है।

भगवान राम के साथ इधर प्रत्येक आदिवासी गर्व करता है कि उन्होंने शबरी के घर मेहमानी की और उनके हाथ का बोर खाया। मेवाड़ में दो तरह के बोर मिलते हैं। एक तो पेमली बोर जो कि किंचित हरापन लिये होता है और दूसरा चणबोर जो पकने पर लाल होता है और छोटे आकार की कांटेदार झाड़ियों में लगता है। यह ऊंची जमीन और सूखे स्थानों पर बहुतायत में मिलता है। दीपावली पूजन पर मिट्टी के दीयों में शुभ-मंगल के प्रतीकार्थ चणबोर भी तेल को तरी देता है। शबरी की तरह हर आदिवासी महिला मेलों-ठेलों या अन्यत्र उल्लास के अवसरों पर जब समूह रूप में गाती-नाचती-ठुमकती एकत्र होती हैं तो रामजी के रूप में अपने गांव में रमैया का आह्वान कर फूली नहीं समाती है-

कद आवोला रमैया म्होरे गाम
ऊबी जोऊं बाटड़ली

अर्थात् मेरे गांव कब आओगे रमैया! मैं खड़ी-खड़ी तुम्हारी बाट जो रही हूं।

राम सर्वत्र व्याप्त हैं। चेतन में ही नहीं, जड़ में भी। वे हर समय अपनी उपस्थिति की छांह तथा छाप देते लगते हैं। दो किनारों के बीच जैसे नदी सुरक्षित हो, निरंतर प्रवाह लिए बहाव दिये रहती है, किंतु उनसे मिलने का अहसास करती हुई भी मिल नहीं पाती है। आदिवासी जनजीवन में राम भी ऐसे ही रमते रहते हैं।

आदिवासी मानते हैं कि राम हमारे सबके आम हैं। उनके होने से ही हमारे चौपाये चुस्त-दुरुस्त हैं। रुंख-वनराई आबाद है। बस्ती आबाद है। नदी-नाले साबत हैं। कहीं कोई ओझका नहीं है, लेकिन जब अतिवृष्टि होकर जोर-शोर का पानी बस्ती को घेर लेता है। तालों-सरोवरों का पानी बेतहाशा होकर ओटे चलते बस्ती को जलमग्न कर देता है। अनावृष्टि में सब ओर सूखा ही सूखा हो जाता है।

वनराई की हरीतमा टाटली हो जाती है। दुधारु पशुओं का दूध सूख जाता है। धरती धूजा मारने लगती है। लोग दाने-दाने को मोहताज हो जाते हैं, तब लगता है राम ने रूठा मान लिया है। ऐसी स्थिति में गांव के किसी राम नामधारी रामधनिया, रामरखिया, रामलछिया, रामरूणिया अथवा रामरसिया को पंच-पंचायती में बुलाकर पंचायती ढोल का डाका दिलाया जाता है। तब अतिवृष्टि का पानी संयत हो जाता है और अनावृष्टि में रिमझिम-रिमझिम बरसात होने लगती है। यही राम नाम की सार्थकता है।

अपने बचपन में कमलवाले तालाब के ओटे से अति वर्षित पानी पूरे गांव में पसर गया था, तब ऐसा ही टोटका किया गया था और देखते-देखते पानी का बहाव मंद पड़ गया था। याद यह भी पड़ रहा है कि तब मन्ना मीणा के घर जिस बालिका ने जन्म लिया था, उसका नाम रामजन्मी रखा था जो चलता नाम रामजणी के रूप में जानी गई।

ऐसा भी होता है जब गाम पटेल की उपस्थिति में किसी होशियार समझेबूझे ज्योतिषियों को बुलाकर राम मनावण का टीपणा दिखाया जाता है, महिलाएं तब समूहबद्ध गीत गाती हुई टेर-पर टेर देती हैं-

म्हारा जूना जोसी राम मिलण कद होसी।

अर्थात् हे मेरे जूने पुराने जोशी! हमारा राम मिलन कब होगा?

सच तो यह है कि राम की ही पकड़ में पूरा पर्यावरण है। हवा, रोशनी, अगन, पानी, वनस्पति सबमें उसकी आतम बसी हुई है। सारे उसके इशारे में खूंटी बंध हैं। वही रसवटी है। वही रसायन है। रसखान है। उसकी मुट्ठी में अकाश कैद है। उसके पांवों में पृथिमी परिचालित है। उसकी हवाखोरी में सबकी सांसें हिंडोले ले रही हैं। उसकी अगन में सभी तपसी बने हुए हैं। उसके जल में सब जलजात बन खिलखिला रहे हैं। वही एक है। अनेकों में एक और एक में अनेकानेक।

राजस्थान में मेवाड़-वागड़ में आदिवासियों की सबसे घनी बसावट है। किसी भी आदिवासी से जब उसका नाम पूछा जाता है तो वह प्रथमत: तो यही कहता है- 'नाम तो श्रीराम को।' फिर अपना नाम, जिस दिन पैदा हुआ, उस दिन से जोड़ता बताता है- 'म्हारो नाम दीतो, होमो, मंगलो, हकरो, थावरो।' यहां दीतो से तात्पर्य दीतवार-रविवार, होमा सोमवार से, मंगलो मंगलवार से, हकरो हकरवार-शुक्रवार से तथा थावरो थावर-शनिवार से है।

लोककला की संस्था भारतीय लोककला मंडल में रहते हमारी प्रार्थना ही- 'थोड़ा नेड़ा बसोनी म्हारा राम रसिया' भजन की होती थी। मीरांबाई की छापवाला यह भजन आदिवासी भजन मंडली से कलाकार दयाराम भील लाया था। वह भवाई नृत्य करते-करते भवाई नाम से ही अधिक जाना गया। इस भजन में मीरां का कृष्ण भी रामरसिया है। सौ से अधिक वर्ष पुराना यह भजन अब भी मुझसे विलग नहीं होकर अंधेरे का उजाला बन मेरा मार्ग प्रशस्त करता है-

थोड़ा नैड़ा बसोनी म्हारा राम रसिया
राम रसिया, मीरकणी रे हिरदां बसिया ओ रामा....
राज रे कारणिये म्हें तो घोड़ी पलाणी रामा
ऊपर जीणा कसिया ओ रामा....
राज रे कारणिये म्हैं तो म्हेल चुणाया रामा
और लगाया जारी जसिया ओ रामा....
राज रे कारणिये म्हैं तो भोजनियो बणायो रामा
और बणाया घेवर चकिया ओ रामा....
बीई मीरां ने प्रभु राम मिलाद्यो
हरि रे चरणां में म्हारा मन बसिया
थोड़ा नैड़ा बसोनी म्हारा राम रसिया।

अर्थात् रामरसिया! तनिक मेरे नजदीक आ बसो। मीरां के ह्रदय में आ बसो। तुम्हारे लिए मैंने घोड़ी पर जीण पलाण कसे। महल बनाकर झाली झरोखे लगवाये। भोजन में घेवर चकी बनाये। मीरां के प्रभु मुझे राम से मिलादो। उनके चरणों में मेरा मन बस गया है। तनिक नजदीक आकर सदा के लिए मेरे ह्रदय में बस जाओ।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved by Section 2(f) of UGC Act 1956)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

ADMISSION OPEN 2023-24

Call us: 9587890142, 9587890082

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES

Approved By RPMC

DIPLOMA

- Radiation Technology (X-Ray)
- Dialysis Technology
- Operation Theatre Technology
- Blood Bank Technology
- Medical Laboratory Technology
- Endoscopy Technology
- ECG Technology
- EEG Technology
- Cath Lab Technology
- Ophthalmic Technology

DEGREE

- Bachelor in Medical Lab Technology
- Bachelor in Radiation Imaging (X-Ray)
- Bachelor in Ophthalmic Technology

9257016003
9587890142

VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY

Approved By PCI

D.PHARMA (2 Years) B.PHARMA (4 Years) 9257016004

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY

B.P.T. (4.5 Years) M.P.T. (2 Years) 9257016002

VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY & MASS COMMUNICATION

B.Voc, M.Voc, B. Des, M. Des (Fashion Designing, Interior Designing)

BA-JMC, MA-JMC 9672978017, 9588936922

VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES

BBA (International Business)

MBA (Hospital Administration and Health Care Management)

9672978017, 9672978038

Research Program

Ph.D. (Nursing and Non-Clinical Medical Sciences)

M.Sc. in Medical Sciences (Non-Clinical)

9587890082

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

Near Umarda Railway Station, Ambua Road, Udaipur, Rajasthan

WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN 0294 - 3510000, +91-86964 40666

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।